॥ ॐ अर्हं नमः ॥

॥ श्रीजिनदत्तसूरिगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीनवपदादि-
तपविधिसंग्रह ॥

संग्रहयिता

मुनिश्री रतनमुनिजी.

— प्रकाशक —

मुनिमहाराज श्रीरतनमुनिजी महाराजना
सदुपदेशथी मुंबईजिनदत्तसूरिज्ञान
भंडारना मेनेजर जवेरी
मुलचंद हीराचंद भगत

संवत् १९९१ वीरसंवत् २४६०

किंमत रु. ०-८-०

— मुद्रक —
श्रीजैनभास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां
मेनेजर बालचंद हीरालाले छाप्युं —जामनगर

प्रस्तावना.

यद्यपि तपावलिमा तपस्यानी घणी विधिओ छे, तथापि सदा वारे मास जे तपस्याओ करवामा आवे छे जेमके नवपदजीनी ओलि तथा वीसस्थानकनी ओलिनी विधि तेना दरेक वंदना चैत्यवंदनादि तेमा नथी, वीजी नवपद वीसस्थानकनी चोपडीओ घणे ठेकाणे छपाणी छे तेमा पण नवेनय चैत्यवंदन स्तवन स्तुतिओ न होवाथी संपूर्ण विधि करनारने अगवड पडती हती, रत्नसागर, आदि मोटा चोपडामा छे ते मोटा होवाथी दरेक जग्याए ते चोपडानो जोग न मळे वास्ते आ लघु चोपडीमा जरूर पडती तपस्यानो समावेश करी संपूर्ण विधि सहित करवामा आवी छे, नवपदनो महात्म्य श्रीपालनाचरित्रथी प्रसिद्ध छे, वीशस्थानकनो महात्म्य पण वीसस्थान चरित्रमा प्रसिद्ध छे अत्रे एक श्रीपोषदशमीनी कथा सक्षेपथी दर्शावेल छे

ली

प्रकाशक

आभार

शास्त्रोमा ज्ञानदानने अग्रपद आपवामा आवेलु छे, कारण के ज्ञान छे ते शीखवाथी अर्थात तेनु मनन करवाथी पोताना आत्मानु कल्याण थाय छे तेमज ज्ञान छे ते एक वहेतो प्रवाह छे जेमजेम ते प्रवाह आगळ वधे अर्थात जेमजेम प्रसिद्ध थाय तेमतेम अनेक भव्य जीवोने ते ज्ञानरूपी मीडी आ ससारसमुद्र तरवाना वहाणरूप बने छे, आवा उद्देशथी प्रेराइ आ ग्रन्थ छपाववामा नीचेना गृहस्थोए पोतानी लक्ष्मीनो सद्व्यय करी पोताना जीवनने सार्थक करी स्वपरना श्रेयमाटे आ ग्रन्थ छपावी प्रसिद्ध करेल छे तेनो आभार मानी रीएमु छु.

कच्छ माडवी निवासी शा प्रेमचद कचरा
पोताना पुत्र इश्वरलालना स्मरणार्थे . रू १५०
कच्छ भुज निवासी लालचदकर्मचदे पोताना
पिताश्री कर्मचद छबीलदासना स्मरणार्थे रू १००
भुज खरतरगच्छ ज्ञानभडारमाथी रू ६०

ली
प्रकाशक

॥ अथ पोषवदि दशमीनी कथा ॥

एक दिवसे श्रीमहावीरस्वामी चंपानगरनी ईशान खुणमा पूर्णभद्र नामना यक्षना चैत्य (वन) ने विषे समोसर्या, त्या गौतमस्वामीए प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा दइने नमस्कार करीने पुछवा लाग्या के हे भगवन् पोषवदि दशमीनु मने महात्म्य कहो, त्यारे भगवान् कहे छे के हे गौतम पोषवदि दशमीने दिवसे श्रीपार्श्वनाथनो जन्म (जन्म कल्याणक) थयो छे, माटे ते दिवसे दशवर्षसुधी दशमीनु व्रत करनाराए बे टंक पडिकमणो पडिलेहण करवु, जिनमदिरमा अष्ट प्रकारी स्नात्र अथवा सत्तरभेदी पूजा करवी, गुरुने पासे व्याख्यान साभळवु पोताने घेर आवीने चैत्यवंदन करीने पञ्चक्खाण पालीने ठाम-चउविहार एकाशणो करवो, नवमीने दिवसे एकठामे शाकर अथवा खाडनु पाणी पीने ठामचउविहार करवो, एकादशीने दिवसे तिविहार एकासणो करवो, अने जन्मकल्याणक दिवसे (श्रीपार्श्वनाथ अर्हते नम) आ पदनी वीसमाला फेरवी आठ थुइथी देव वांदवा, पारणाना दिवसे शक्तिने अनुसार साधर्मि भाइयोने जमाडवा, त्रण दिवस सुधी शीलव्रत पाळवो, भाव्रत भाव पूर्वक करवाथी सुरदत्त शेठनी पेठे आलोकने विषे धन धान्य पुत्रादिकनी वृद्धि, परलोकने विषे इंद्रादि-

कनी पदवी अनुक्रमे मोक्षनी प्राप्तिपामे,(तथाहि) आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे सुरेंद्रपुर नामनु नगर हतु त्या नरसिंह नामनो राजा राज्य करतो हतो, ते राजानी गुणसुंदरी नामनी राणी हती, ते नगरने विषे महा धनवान् दानी तेजस्वी प्रतापी एवो सुरदत्त नामे शेठ रहतो हतो, परतु मिथ्याद्दष्टी हतो, तेनी शीलवती नामनी स्त्री हती, एक वखते ते शेठ अशुभ कर्मना उदयथी व्यापार करवा माटे किरियाणाना सवासो वहाणो भरीने रत्नद्वीप प्रत्ये चाल्यो, त्या किरीयाणो वेंचीने बीजो नवा त्यानो किरियाणो ल्इ तेनाथी वहाणो भरीने पोताना नगर प्रति चाल्यो, तेवामा दैवयोगथी पवनना जोरथी वहाणा आडे मार्गे चाल्या, ते कालकूटद्वीपने विषे आवी पड्या, अने त्यां पाणीनो चक्र पडवाथी त्याथी नीकली शक्या नही, तेथी त्याज रोकाइ रह्या, पोते वहाणोमाथी सारो द्रव्य लइ पाचसो गाडा भरीने वहाणोने त्या मुकीने पग रस्ते चाल्या, रस्तामा आवता सवासो गाडा चोरोए लुंटी लीधा, सुरदत्तशेठ द्रव्य रहित पोताने घेर आव्यो, अने त्या घरना भंडारमा अगीयार क्रोड सोनामहोर पण सर्पवृश्चिक रूप थइ गया, गाममा शेठ पद हतो, ते पण निर्धन थवाथी चाल्यु गयु, सव ठेकाणे अपमान थवा लाग्यो, शेठ दु खे करी पोतानी आजीविका चलावे छे, एवामा सुरेंद्रपुर नगरना उद्यानमा श्रीजयघोषनामना आचार्य आवी समोसर्या, सुरदत्तशेठे

पण आचार्य महाराजनो उपदेश सांभळीने प्रतिबोध पामीने स
मकितमूल बारव्रत लीधा, अने कह्युके हे भगवान् कोइपण एवु
साधन बतावोके जे साधनकरवाथी मारु घरमा राखेलु धन
अने गयेलु धन पाछु आवे, त्यारे गुरुए कीधु हे शेठ पोष-
वदि दशमीनु व्रत करवाथी गएलु धन पाछु आवे छे, सर्व
मुख संपत्तिनो भागी थाय छे, त्यारे शेठे भावपूर्वक ते पोष-
वदि दशमीनो व्रत लीधो, पूर्वे कहेल विधिथी दशवर्ष सुधी ते
व्रत करवा लाग्यो, ते व्रत पूरण थतांज कालकूटद्वीपमा रोका-
एला जे सवासो सेठना किरियाणाथी भरेला वहाणो हता, ते
पोतानी मेळे अनुकूल पवनथी सेठना गाममा आव्या, अने
भंडारमा सर्वद्रव्यकि थइ गएली अगीयार क्रोड सोनामहोरो
थइगइ, पछी पहेलानी माफक शेठने मान सन्मान मिलवा
लाग्या, अने व्यापार चालवा लाग्यो, धर्म उपर पूर्ण श्रद्धा
थइ पछे शेठे ज्ञान दर्शन अने चारित्रनी दशदश वस्तुओ भेगी
करीने ते व्रतनु उजमणु कर्यु, साधर्मि भाइओनी भक्ति करी,
पछे एक वखते सुरदत्तशेठ पोताना पुत्रने घरनो भार सोंपीने
पोषवदि दसमीना व्रत करवानी भलामण दइने पोते श्री
मुनीन्द्रसूरिने पासे चारित्र लइने सारी रीते चारित्र पाळीने
अतमा सलेखना पूर्वक अणसण करीने दशमा देवलोकने विषे
वीस सागरोपम आउखावाला देव थया, त्यांथी चवीने आ
जंबूद्वीपना महाविदेहने विषे पुष्कलावती विजयने विष मंगला-

वती नगरीमा सिंहसेनराजानी राणी गुणसुंदरनी कूखमा पुत्र पणे उत्पन्न थयो अने अनुक्रमे जन्म थयो त्यारे पिताए जय सेन तेनो नाम राख्यु, ते जयसेन राजपुत्र भणी गणीने हुशीआर थयो, यौवन वये शीलवती नामनी राजपुत्रीने साथे तेनो विवाह थयो अने अनुक्रमे राज्य पालीने विषयसुखने त्यागकरीने गुरुनी पासे जयसेने चारित्र लीधो, अने अनुक्रमे गीतार्थ थइने जिनकल्पीपणो अंगीकार करीने तेज गामना उपवनमा काउसगपणे जयसेन मुनि रह्या त्यां मिथ्यात्वीदेवे तेने सिंहादिकना उपसर्ग कर्या, ते उपसर्गो सहन करता करता केवलज्ञान उत्पन्न थयो, ते देव पण प्रतिबोध पाम्यो, ते जयसेन केवली घणा भव्य जीवोने प्रतिबोधीने मोक्ष गया अने तेनी स्त्री जे शीलवतीए पण चारित्र लीधो, शीलवती साध्वीने पण मिथ्यात्वी देवे सिंहादिकना उपसर्ग कर्या, पण ते चलायमान न थइ, देव प्रतिबोध पामीने स्वर्गे गयो, ते साध्वी पण अंतमा काल करीने देवलोकमा गइ अने त्यांथी चवीने महाविदेहक्षेत्रमा चारित्र लइने कर्म खपावीने मोक्ष जासे, आ पोषवदि दशमीनी कथा जाणवी.



दीक्षा वि स ११४१

परमपूज्य जगम यु। प्रधान भट्टारक

दादा साहब

जन्म वि स ११३२

आचार्यपद वि. स ११६९



श्रीजिनदत्त सूरिजी महाराज

स्वर्गवास वि स १२११

J P Press JAMNAGAR

विषयानुक्रमणिका





ॐ ह्रीं अर्हं नम

॥ श्रीजिनदत्तसूरिभ्यो नमः ॥

॥ श्रीनवपदादि तपविधिसंग्रह ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय जय श्रीअरिहंत भानु, भवि कमल विकाशी ॥
लोकालोक अरूपिरूपि, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥१॥
समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृतमल राशी ॥
शुक्लचरम शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी ॥२॥
अनरंग रिपु गण हणीए, हुए अप्पा अरिहंत ॥
तसुपद पंकजमें रत्त, हीर धर्म नित संत ॥३॥

॥ अथ अरिहत पद स्तवन ॥

श्रीतेरमगुण ठामिके ठन, कर्मकु भजे श्रीअरिहन्त। मनमानले। अष्ट समयमे समयतीन, सर्व आहारथी हावे हीन। मन० ॥ १ ॥ बादर काये मन वच योग, तनु तनुसे पुन सूक्ष्म मनुयोग। मन०। सुक्ष्म कायते मन वच रोक, निजवीर्ये ताकु कर फोक। मन० ॥२॥ सन्नीमात्रके मन व्यापार, बे इन्द्रीने वचन प्रकार। मन० आदिसमय रह्यो पण कसु जीव, सुक्ष्म लह्यो तिण जोग अतीव। मन० ॥ ३ ॥ एमा योगथी समय एक, हीना सब्ब गुणो करी टेक। मन०। समया मखे जोग निरोध, कृत्वा जो रह्यो जोगी शोध। मन० ॥ ४ ॥ बेहसमे अनाहार ताणाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय। मन०। तेरमे गुणमे गुण ममे देव, आपो मा जगकु नितमेव। मन० ॥ ५ ॥

॥ अथ अरिहंतपद थुइ ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक सरूपोजी। केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनंत गुणे करी पूरोजी ॥ बीजें भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरोजी। बारे गुणा करी एहवा अरिहत, आराधो गुण भूरोजी ॥ १ ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्वंमान, तनु हीन तिभागी । पुव्वपय-
योगप्रसंगसें, ऊरधगति जागी ॥ १ ॥ समय एकमें
लोक प्रान्त, गये निगुण नीरागी । चेतन भूपे आतम
रूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दसण नाण
वीग, रूपातीत स्वभाव । सिद्ध भए तसु हीर धर्म,
वदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवन ॥

(थारे महिला ऊपर मेह झरोखे बीजली ॥ ए चाल)

अष्ट परम नग मास हीना कोडी पूर्वमें म्हारा
लाल ही० । उत्कृष्ट करे वास सयोगी धाममें म्हा० स० ॥
अजोगी के अत तजे भव भव्यना म्हारा० ॥ त० ॥
शैलेशी लहे कष्ट दले गुणश्रेणिना म्हारा० । द० ॥ १ ॥
हस्याक्षर पंच काल रहे ते योगमें । म्हा० र० ॥
तेरम प्रकृतिनो अन्त करीने अन्तमें म्हा० क० ॥
गमन करे नगरजसें । अमिय होयने म्हा० अ० ॥
पुव्वपयोग असग स्वभाव अवधनें म्हा० स्व० ॥ २ ॥
इषु गुण नवपरिमाण जोजन लक्षेकही म्हा० जो० ॥
पहुल विशद्य भाश निगलयन मही म्हा० नि० ॥
मध्ये जोजन अष्ट घना गृति अन्तमें म्हा० ग० ॥

मक्षी पक्षथी हीन भणी सिद्धातमें म्हा० भ० ॥ ३ ॥
तनुप त्भारा नाम शिलामें जोयनें म्हा० शि० ॥
लघु अगुल बत्तीस प्रमाण अवगाहना म्हा० प्र० ॥
वृद्धिघनु ज्ञान पच गुणसें हीनता म्हा० गु० ।'
मिलिया एकमें नन अबाधा नाल्ही म्हा० अ० ॥
अष्ट प्राण धरि रम्य सिरी हिजो सही म्हा० सि० ॥
बीजो पद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें म्हा० धरो० ॥
कुशल भये जग जीव मिलोगा तेहमें म्हारा० मि० ॥ ५ ॥

॥ अथ सिद्धपदनी थुइ ॥

अष्ट करमकु दमन करीनें, गमन कियो शिव वासीजी । अव्याबाध सादि अनादि, चिदानंद चिद्-राशीजी । परमातम पद पूरण विलासी, अघ घन दाघ विनाशीजी । अनत चतुष्टय शिवपद ध्यावो, केवल ज्ञानी भाषीजी इति ॥ २ ॥

॥ अथ आचार्य पद चैत्यवदनम् ॥

जिनपदकुल मुख रस अनिल । मिनरसगुण धारी
प्रबल सबल घन मोहकी । जिणते चमु हारी ॥ १ ॥
रूव्यादिक जिनराजगीत । नय तन विस्तारी । भय

कृपै पापें पडन । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पचाचारी जीवके । आचारज पदसार । तिनकु वदे हीर धर्म अठोत्तरसोवार ॥ ३ ॥ इति ॥



॥ अथ आचार्यपदस्तवन ॥



(मणदल थींदलीले ए चाल)

ध्वनी खड्गथी जेणें । हण्यो मोघ सुभट मम देणें हो । गणपति गुण पेखी । मान महागिरि थयरें । अति सोभन मदव थयरें हो । ग० । दम्भरूप विषवेली । वर अज्रव कीलें ठेली हो ॥ ग० ॥ मूर्च्छा वेलथी भरीयो । लोह सागर मुत्तेनरियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन नाग मद हीनो । जिणदम नाम जंत्र कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह महामल्ल ताडयो । पुण वैराग मुगरें पाडयो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोष गयद वस कीनो । धरी उपशम अकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अतरगरिपु भेग्या । सुरवर पिणजिण निपेख्या हो । ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस कृती गुणथी लीनो । सूत्र अर्थे आगम पीनो हो० ॥ ग० ॥ आचारिज पद गह्वो । धरी जीव कुशलता सेवो हो ॥ग०॥५॥इति॥३



॥ अथ आचार्यपदनी थुइ ॥

पचाचारकु पाले उजवाले, दोष रहित गुणधारीजी। गुण छत्तीसे आगमधारी, द्वादश अंग विचारीजी। प्रबल सबल घन मोह हरणकु। अनिल समो गुण वाणीजी। क्षमा सहित जे संयम पाले, आचारज गुण ध्यानीजी ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ उवझायपद चैत्यवदनम् ॥

धन धन श्री उवझाय राय। शठता घन भंजन ॥ जिनवर दर्शित द्वादशांग। धरकृतजनरंजन ॥ १ ॥ गुणनणमजण मणे गयद। सुयशृणि किय गंजण ॥ कुनय लोय लोयणें। जत्थय सुय मजण ॥२॥ प्राणमें जिन लह्यो ण। आगमसें पद तुर्य। तिनपें अहिनिश हीर धर्म। पदे पाठकवर्य। ३। इति। ४

॥ अथ उपाध्याय पद स्तवन ॥

(सावलीया अलगा रहोने ए चाल)

हृयनें रे दूरी हृयनें। चेतन भावे शठनें दूरी होयनें तु मुझ पास क्यु आवे दृ० तुझनें कुण बतलावे दृ० ॥ आकणी ॥ तो मगे निज पचेंद्रीनो। रचना चरम छलाणो। नाणा वरणी खय उपश

मस । भावेंद्री मडाणो दू० ॥ १ ॥ इन्यें ते पर जात्ते कीना । जातिनाम व्यपदेश । एव तो गो तुरग गजादिक । किण कर्म उपदेश दू० ॥ २ ॥ इन्द्रादिक बहु मुग्धकु शाका । तेरे सग लागी । नीलवर्ण की शमतालेती । मैं भयो तोसुरागी दू० ॥३॥ उप कहीये हणीयो भवियानो । अधिया लाभत आय आधीमागत पीडानामें मायोयेन विलाय दू० ॥४॥ आधिस्ये स्मरायै वर आगम । सुत्रमें ते उवझाय तत्सेवा नें हणि मठताकु । चेतन कुशलता थाय दू०॥इति॥५॥

॥ अथ उपाध्याय पद स्तुति ॥

अग इग्यारे चउदे पूरव, गुण पचवीसना धारीजी । सूत्र अरथर पाठक कहिये, जोग समाधि विचारीजी । तपगुणसूरा आगम पूरा, नयनिक्षेपे तारीजी । मुनि गुणधारी बुधविस्तारी, पाठक पूजो अधिकारीजी इति ४

॥ अथ साधुपद चैत्यवदनाम् ॥

दशण नाण चरित्त करी । वरशीवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि धकसें । आदि मरत्य कामी ॥ १ ॥ गुण पर्मत्त अपमत्तातें । भये अतर जामी । मानस इदिय दमनभूत । शमदम अभिरामी ॥ २ ॥ चारित घन गुगगण भर्यो ए । पचमपद मुनिराज । तत्पद पकज नमत है ॥ हीर धर्मके काज ॥ ३ ॥

॥ अथ दर्शनपद थुइ ॥

जिन पन्नत्त तत्व सुधा सरधै, समकित गुण उजवालैजी । भेद छेद करी आतम निरखी, पशु टाली सुरपावैजी । प्रत्याख्यानें समतुल्य भाख्यो, गणधर अरिहंतशूराजी । ए दरशनपद नित नित वंदो, भवसागरको तीराजी ॥ इति

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदनम् ॥

क्षिमादिक सम शम धरि है । मित आदम नाण । भाव मिलापमें जिन जनित । सुय बीश प्रमाण १ भवगुण पज्जवओहि दोय । मण लोचन नाण । लोका लोक सरूप जाण । इक केवल नाण ॥ २ ॥ नाणा वरणीनासथी ए । चेतन नाण प्रकाश । सप्तम पदमें धीर धर्म । नित चाहत अवकाश ॥३॥ इति

॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

(म्हारे अति उछरंगो ए चाल)

जिनवर भाषित आगम भणिया । तत्व यथा-स्थिति गमियाजी म्हारे जगजन तारू । ते उत्तम, वर नाण कहीये भविजन अहनिशि चाहे जी म्हा० ॥१॥

भक्ष्या भक्ष्य कुपथ सुपथा । पेयापेय अग्रभाजी म्हा०
देव कुदेव अहितहित धारी । जाणे जेण विचारीजी
म्हा० ॥ ३ ॥ श्रुति मति दोय ने इंद्रीसारु । तेण
परोक्ष विचारुजी म्हा० । ओहीमण केवल हैं वारु ॥
जीव प्रत्यक्ष सुधारुजी म्हा० ॥ ३ ॥ अक्षविजस्स
पक्षेगा जाणे । लोकादिक अनुमानेंजी । म्हा० त्रिभु
वन पूजे जासु पसायें । धारी शुभ अध्यवसायेंनी
म्हा० ॥ ४ ॥ नाणा वरणी उपशम क्षपथी । चेतन
नाणकुं विलासैजी म्हा० ॥ सप्तम पदम मविचन
हरषे । निशदिन कुशलता निरखैजी, म्हा० ५ इति



॥ अथ ज्ञानपद थुइ ॥

मति श्रुत इद्री जनित कहियें, लहीय गुणगंभीरोजी । आतम धारी गणधर विचारी, द्वादश अग निस्तारीजी । अवधि मन पर्यव केवल वलि, प्रत्यक्षरूप अवधारोजी । ए पांच ज्ञानकुं वंदो पूजो, भविजननें सुखकारोजी ॥ इति

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदनम् ॥

जस्स पसायें माहू पाय । जुग जुग

नमन करै सुभभावलाय । फुण नरपति वृन्द ॥१॥ जपै गरि अरिहनराय । करि कर्म निकंद । सुमति पञ्च तीन गुप्तियुतादे सुसत्व अमद ॥ २ ॥ इसु कृति मान कषायथील । रहित लेश सुचिवत ॥ जीव चारित्रकु हीर धर्म । नमन करत नित संत ३ इति

॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

निर्विकल्प अजनिर्गुणी । चिदाभास निस्सग । (सुग्यानी साभलो) मूर्तिहीन चेतन करै । रूपी पुद्गल रग (सुग्यानी सा०) ॥ १ ॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा । कार्य कारण भाव सु० कृत्स्न जोग सुधामता । लब्धा सग स्वभाव ॥ सु०॥ २ ।' पर्याप्ता लघु जागमें । वृद्धिलहे जुगमान (सु०) मध्ये वसुसमयें लहै । अते दोते जाण [सु०] ॥ ३ ॥ सहकारी मानस मुखा । कारण रम्य बलेण सु० प्राप्ता घस्र प्रकारता । मस प्राभृतका तेन सु० ॥ ४ ॥ तद्रोधनरूपी मलो । चेतन सयम धाम (सु०) कर घनमिलपद पर्मगे । कुशल भवतु अभिराम (सु०) ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ चारित्रपद थुई ॥

करमअपचय दूर खपावै,, आतम ध्यान ध्यावैजी। धारे भावना सूधी भावै, सागर पार उतारेजी। षट्खंड राजक्रु दूर तजीनें, चक्री संजम धारेजी। एहवो चारित्र नित नित वंदो आतम गुण हितकारैजी ॥ इति

॥ अथ तपपद चैत्यवंदनम् ॥

श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ। तद्भवशिव जाण। विहि अतैरपि बाह्य। मध्य द्वादश परिमाण ॥ १ ॥ वसु करमित आमोसही। आदिक लब्धि निदान। भेदै ममतासुनविणें। दग्धन कर्म विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद भलोए। इच्छा रोध सरूप। वद्-नसें हिर धर्म। दूर भवतु भवकूप ॥ ३ ॥ इति

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

बारस भेद भण्या जिनराजै। बाह्य मध्य नवा जगराजैरे (शिवपदश्रेणि) निज भव सिद्धिनवा घर ध्याना। जिनवर विण तपना करतारे ॥१॥ [जि०]

समता मस्तिते जिनते भारी । भली कर्म च मुपिण हारी रे (शि०) जीव कलकसें कर्म कचोग। दहै तप पावनका जोरारे (शि०) ॥ २ ॥ तप तरुवरना कुसुम है ऋद्धि । देव नरनाफलते मिद्धीरे (शि०) पाप सकलहे तमनी राशी । तप भानुसें जाये नाशीरे (शि०) ॥ ३ ॥ जस्स पसाये लब्धि वारू । लब्जी सगली जगहित कारूरे (शि०) अति दुष्कर कुण साध्यनाती ना । कामतालें वारू कीनारे (शि०) ॥ ४ ॥ इच्छारोधनरूपी कहिये । तपपद हीर चेतन वहियेरे (शि०)



॥ अथ तपपद थुई ॥

इच्छारोधन तपतें भारयो, आगम तेहनो सा खीजी । द्रव्य भावसें द्वादश दाखी, जोग समाधि राखीजी । चेतन निजगुण परणित पेखे, तेहीज तप गुण दाखीजी । लब्धि सकलनो कारण देखी, ईश्वरसें मुखभापीची ॥ इति



॥ अथ अरिहतना १२ गुण ॥

१ अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नम

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहनाय नम
३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहनाय नम
४ चामर युग प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नम
५ स्वर्णसिंहासन प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहनाय नम
६ भामडल प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहनाय नम
७ दुन्दुभि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहनाय नम
८ छत्रत्रय प्रातिहार्य सयुनाय श्रीअरिहनाय नम
९ ज्ञानातिशय सयुनाय श्रीअरिहनाय नम
१० पूजातिशय सयुनाय श्रीअरिहताय नम
११ वचनातिशय सयुताय श्रीअरिहताय नम
१२ अपायापगमातिशय सयुताय श्रीअरिहताय नम



॥ अथ सिद्धनां ८ गुण ॥

१ अनन्त ज्ञान सयुताय श्रीसिद्धाय नम
२ अनन्त दर्शन सयुताय श्रीसिद्धाय नम
३ अव्याबाध गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नम
४ अनन्तचारित्र गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नम
५ अक्षयस्थिति गुण सयुनाय श्रीसिद्धाय नम
६ अरूपीनिरजन गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नम
७ अगुरु लघु गुण सयुनाय श्रीसिद्धाय नम
८ अनन्तवीर्यगुण सयुताय श्रीसिद्धाय नम

॥ अथ आचार्यपदना ३६ गुण ॥

१ प्रतिरूप गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
२ सूर्यवत्तेजस्वि गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
३ युगप्रधानागम सयुताय श्रीआचार्याय नम'
४ मधुर वाक्य गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम.
५ गाभीर्य गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
६ धैर्य गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम.
७ उपदेश गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
८ अपरि श्रावी गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
९ सौम्य प्रकृति गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
१० शीलगुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
११ अविग्रह गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम'
१२ अविकथक गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
१३ अचपल गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
१४ प्रसन्न वदन गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
१५ क्षमा गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
१६ ऋजु गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम.
१७ मृदु गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
१८ सर्व्व सग मुक्ति गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम.
१९ सग मुक्ति गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
२० सप्तदशविध सयम गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम

२१ सत्यव्रत गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम
२२ शौच गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम
२३ अकिंचन गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम
२४ ब्रह्मचर्य गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम
२५ अनित्यभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
२६ अशरणभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
२७ ससारस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
२८ एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
२९ अन्यत्वभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
३० अशुचिभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
३१ आश्रवभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
३२ सवरभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
३३ निर्जराभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
३४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
३५ बोधिदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम.



॥ अथ उपाध्यायना २५ गुणो ॥

१ आचारागसूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउपाध्यायाय नम
२ सुयगडागसूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउपाध्यायाय नम
३ श्रीठाणागसूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउपाध्यायाय नम

४ श्रीसमवायंगसूत्र पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
५ श्रीभगवतीसूत्र पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
६ श्रीज्ञातासूत्र पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
७ श्रीउपासकदशाङ्गसूत्र पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
८ श्रीअनगडदशाङ्गसूत्र पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
९ श्रीअणुत्तरोववाईसूत्र पाठनगुणसंयुताय श्रीउ० नमः
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पाठनगुणसंयुताय श्रीउ० नमः
११ श्रीविपाकसूत्र पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
१२ श्रीउत्पादपूर्व पाठनगुण संयुताय श्रीउपा० नमः
१३ श्रीआग्रायणीपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
१४ श्रीवीर्यप्रवादपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
१५ अस्तिप्रवादपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
१७ सत्यप्रवादपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
१८ आत्मप्रवादपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
१९ कर्मप्रवादपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउ० नमः
२१ विद्याप्रवादपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
२२ अविघ्यप्रवादपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
२३ प्राणायामप्रवादपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउ० नमः
२४ क्रियाविशालपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः
२५ लोकबिंदुसारपूर्व पाठनगुणसंयुताय श्रीउपा० नमः

॥ अथ साधुपदना २७ गुण ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नम
२ मृषावादविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नम
३ अदत्तादानविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नम
४ मैथुनविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नम
५ परिग्रहविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नम
६ रात्रिभोजनविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नम'
७ पृथ्वीकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम.
८ अप्पकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम
९ तेऊकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
१० वाऊकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम
११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
१२ त्रसकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम.
१३ एकद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नम.
१४ बेइद्रिजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नम
१५ त्रेइद्रीजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
१६ चौरिंद्रीजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नम
१७ पचेंद्रीजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नम
१८ लोभनिग्रहकारकाय श्रीसाधवे नम
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्रीसाधवे नम
२० शुभभावनाभावकाय श्रीसाधवे नम

२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्रीसाधवे नम'
२२ संयमयोगसयुक्ताय श्रीसाधवे नम
२३ मनोगुप्तिसयुक्ताय श्रीसाधवे नम
२४ वचनगुप्तिसयुक्ताय श्रीसाधवे नम
२५ कायगुप्तिसयुक्ताय श्रीसाधवे नम
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीशहसहणतत्पराय श्रीसा० नम
२७ मरणांत उपसर्ग सहण तत्परायश्रीसाधवे नम



॥ अथ दर्शनपदना ६७ गुण ॥

१ परमार्थ सस्तवरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
२ परमार्थज्ञातृसेवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
३ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
४ कुदर्शन वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
५ शुश्रूषारूप श्रीसद्दर्शनाय नम
६ धर्मरागरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
७ वैयावृत्यरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
८ अर्हद्विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
९ सिद्धविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
१० चैत्यविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
११ श्रुतविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नम.
१२ धर्मविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१३ साधुवर्गविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः

१४ आचार्यविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१५ उपाध्यायविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
१६ प्रवचनविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नम.
१७ दर्शनविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नम.
१८ ससारेजिनसारमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
१९ ससारेजिनमतसारमिति चिंतनरूपश्रीसद्दर्शनायनम.
२० ससारेजिनमतस्थित साध्वादिसारमिति चिंतन-
रूप श्रीसद्दर्शनाय नम
२१ शकादूपणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नम'
२२ काक्षादूपणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नम
२३ विचिकित्सारूप दूपणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नम
२४ कुदृष्टिप्रशसा दूपणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नम
२५ तत्परिचय दूपणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नम
२६ प्रवचनप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
२७ धर्मकथाप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
२८ वादिप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
२९ नैमित्तकप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
३० तपस्विप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नम.
३१ प्रज्ञप्त्यादिविद्याभृत्प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
३२ चूर्णांजनादिसिद्धप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नम'
३३ कविप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नम.

३४ जिनशासने कौशलभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३५ प्रभावनाभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३६ तीर्थसेवाभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३७ धैर्यभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३८ जिनशासने भक्ति भूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३९ उपशमगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
४० संवेगगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
४१ निर्वेदगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
४२ अनुकम्पागुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
४३ आस्तिक्यगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
४४ परतीर्थकादिवन्दनवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
४५ परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
४६ परतीर्थकादिआलापवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
४७ परतीर्थकादिसंलापवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
४८ परतीर्थकादिअसनादिदानवर्जनरूप श्रीस० नम
४९ परतीर्थकादिगंधपुष्पादिप्रेषणवर्जनरूप श्रीस० नमः
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नम.
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नम
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नम
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नम
५४ कान्तारवृत्त्याकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नम

५५ गुरु निग्रहाकारयुक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
५६ सम्यक्त्व चारित्र- धर्मस्य मूलमितिचिंतन श्रीसद्दर्शनाय नम
५७ सम्यक्त्व चारित्रधर्मपुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसद्दर्शनाय नम
५८ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन श्रीसद्दर्शनाय नम
५९ सम्यक्त्वचारित्रधर्मस्याधारमितिचिंतन श्रीस०नम
६० सम्यक्त्वचारित्रधर्मस्य भाजनमितिचिंतन श्रीस०नम
६१ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य निधि सन्निभामिति चिंतन श्रीसद्दर्शनाय नम.
६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयुक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नम'
६३ सचजीवो नित्येति श्रद्धानस्थानयुक्ताय श्रीस० नम
६४ सचजीव' कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नम
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नम
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति- श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नम
६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नम.

॥ अथ ज्ञानपदना ५१ गुण ॥

१ स्पर्शनेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम
२ रसनेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम
३ घ्राणेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम'
४ श्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम
५ स्पर्शेन्द्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम.
६ रसेन्द्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम
७ घ्राणेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम
८ चक्षुरिंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम
९ श्रोत्रेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम
१० मनोअर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम
११ स्पर्शेन्द्रिय ईहा श्रीमति ज्ञानाय नम
१२ रसेन्द्रिय ईहा श्रीमति ज्ञानाय नम'
१३ घ्राणेंद्रिय ईहा श्रीमति ज्ञानाय नम
१४ चक्षुरिंद्रिय ईहा श्रीमति ज्ञानाय नम.
१५ श्रोत्रेंद्रिय ईहा श्रीमति ज्ञानाय नम
१६ मन ईहा श्रीमति ज्ञानाय नम
१७ स्पर्शेन्द्रिय अपाय श्रीमति ज्ञानाय नम
१८ रसेन्द्रिय अपाय श्रीमति ज्ञानाय नम
१९ घ्राणेंद्रिय अपाय श्रीमति ज्ञानाय नम.
२० चक्षुरिंद्रिय अपाय श्रीमति ज्ञानाय नम'

२१ श्रोत्रेंद्रिय अपाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
२२ मनकरीअपाय श्रीमति ज्ञानाय नम
२३ स्पर्शेंद्रियधारणा श्रीमति ज्ञानाय नम
२४ रसेंद्रियधारणा श्रीमति ज्ञानाय नम
२५ घ्राणेंद्रियधारणा श्रीमति ज्ञानाय नम
२६ चक्षुरिंद्रियधारणा श्रीमति ज्ञानाय नम
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणा श्रीमति ज्ञानाय नम
२८ मनोधारणा श्रीमति ज्ञानाय नम।
२९ श्रीअक्षर श्रुतज्ञानाय नम
३० श्रीअनक्षर श्रुतज्ञानाय नम
३१ श्रीसज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः
३२ श्रीअसज्ञी श्रुतज्ञानाय नम
३३ श्रीसम्यक् श्रुतज्ञानाय नम
३४ श्रीमिथ्या श्रुतज्ञानाय नम
३५ श्रीसादि श्रुतज्ञानाय नम
३६ श्रीअनादि श्रुतज्ञानाय नमः
३७ श्रीसपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नम
३८ श्रीअपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नम
३९ श्रीगमिक श्रुतज्ञानाय नम
४० श्रीअगमिक श्रुतज्ञानाय नम
४१ श्रीअगमप्रविष्ट श्रुतज्ञानाय नम

४२ श्रीअनंगप्रविष्ट श्रुतज्ञानाय नम॰
४३ श्रीअनुगामि अवधिज्ञानाय नम॰
४४ श्रीअननुगामि अवधिज्ञानाय नम
४५ श्रीवर्द्धमान अवधिज्ञानाय नम॰
४६ श्रीहीयमान अवधिज्ञानाय नम
४७ श्रीप्रतिपाति अवधिज्ञानाय नम
४८ श्रीअप्रतिपाती अवधिज्ञानाय नम
४९ श्रीऋजुमति मन पर्यवज्ञानाय नम
५० श्रीविपुलमतिमन पर्यवज्ञानाय नम
५१ लोकालोकप्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नम

॥ अथ चारित्रपदना ७० गुण ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप श्रीचारित्राय नम
२ मृषावादविरमणरूप श्रीचारित्राय नम
३ अदत्तादानविरमणरूप श्रीचारित्राय नम
४ मैथुनविरमणरूप श्रीचारित्राय नम
५ परिग्रहविरमणरूप श्रीचारित्राय नम
६ क्षमाधर्मरूप श्रीचारित्राय नम
७ आर्जवधर्मरूप श्रीचारित्राय नम
८ मृदुताधर्मरूप श्रीचारित्राय नम
९ मुक्तिधर्मरूप श्रीचारित्राय नम
१० तपोधर्मरूप श्रीचारित्राय नम

११ संयमधर्मरूप श्रीचारित्राय नमः
१२ सत्यधर्मरूप श्रीचारित्राय नमः
१३ शौचधर्मरूप श्रीचारित्राय नमः
१४ अकिंचनधर्मरूप श्रीचारित्राय नमः
१५ ब्रह्मचर्यधर्मरूप श्रीचारित्राय नमः
१६ पृथ्वीरक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
१७ उदकरक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
१८ तेउरक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
१९ वाउरक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
२० वनस्पतिरक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
२१ बेइंद्रिरक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
२२ तेइंद्रिरक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
२३ चौरिंद्रिरक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
२४ पंचेन्द्रिरक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
२५ अजीवरक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
२६ प्रेक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
२७ उपेक्षासंयम श्रीचारित्राय नमः
२८ अतिरिक्त वस्त्रभक्तादिपरठण त्यागरूप संयम गुणयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः
२९ प्रमार्जनरूप श्रीचारित्राय नमः
३० मनःसंयमरूप श्रीचारित्राय नमः

३१ वाक्संयमरूप श्रीचारित्राय नमः
३२ कायासंयमरूप श्रीचारित्राय नमः
३३ आचार्यवैयावृत्यरूपसंयम श्रीचारित्राय नमः
३४ उपाध्याय वैयावृत्यरूप संयम श्रीचारित्राय नमः
३५ तपस्विवैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
३६ लघुशिष्यादि वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
३७ ग्लानसाधु वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
३८ साधुवैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
३९ श्रमणोपासक वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
४० संघवैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
४१ कुलवैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
४२ गणवैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
४३ पशुपंडगादि रहित वसति वसन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
४७ कुड्यांतर सहित स्त्री हावभाव सुणन वर्जन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः

४९ अतिसरस आहार वर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
५० अतिआहार वर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नम
५१ अगविभूषावर्जन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नम
५२ अनशनतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
५३ ऊनोदरीतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
५४ वृत्तिसक्षेपतपोरूप श्रीचारित्राय नम
५५ रसत्यागतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
५६ कायक्लिेशतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
५७ सलेखणातपोरूप श्रीचारित्राय नमः
५८ प्रायछितनपोरूप श्रीचारित्राय नम
५९ विनयतपोरूप श्रीचारित्राय नम
६० वैयावचतपोरूप श्रीचारित्राय नम
६१ सिज्झायतपोरूप श्रीचारित्राय नम
६२ ध्यानतपोरूप श्रीचारित्राय नम
६३ उपसर्गतपोरूप श्रीचारित्राय नम
६४ अनतज्ञानसयुक्त श्रीचारित्राय नम
६५ अनतदर्शनसयुक्त श्रीचारित्राय नम
६६ अनतचारित्रसयुक्त श्रीचारित्राय नमः
६७ क्रोधनिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नम
६८ माननिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नमः
६९ मायानिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नमः
७० लोभनिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नम



॥ अथ तपपद्ना ५० गुण ॥

१ यावत्कथक तपसे नम
२ इत्वरतपभेद तपसे नम.
३ बाह्यऊनोदरी तपभेद तपसे नम
४ अभ्यंतरऊनोदरी तपभेद तपसे नम
५ द्रव्यतपवृत्ती सखेपतपभेद तपसे नम
६ क्षेत्रतपवृत्ती सखेपतपभेद तपसे नम
७ कालतपवृत्ती सखेपतपभेद तपसे नम
८ भावतपवृत्ती सखेपतपभेद तपसे नम
९ कायकिलेस तपभेद तपसे नम
१० रसत्याग तपसे नम
११ इंद्रिकषाययोग विषयक सलीणता तपसे नम.
१२ स्त्रीपशुपडकादि वर्जितस्थान अवस्थित सलीणता तपसे नम.
१३ आलोयण प्रायछित तपसे नम
१४ पडिक्कमण प्रायछित तपसे नम
१५ मिश्र प्रायछित तपसे नम
१६ विवेक प्रायछित तपसे नम
१७ उपसर्ग प्रायछित तपसे नम
१८ तप प्रायछित तपसे नम
१९ भेद प्रायछित तपसे नम

४१ पृछना	तपसे	नम॰		
४२ परावर्तना	तपसे	नमः		
४३ अनुप्रेक्षा	तपसे	नमः		
४४ धर्म्मकथा	तपसे	नम		
४५ आर्त्तध्यान	निवृत्त	तपसे	नम॰	
४६ रौद्रध्यान	निवृत	तपसे	नम	
४७ धर्म्मध्यान	चिंतन	तपसे	नमः	
४८ शुक्लध्यान	चिंतन	तपसे	नम	
४९ बाह्य	उपसर्ग	सहनरुप तपसे	नम	
५० अभ्यंतर	उपसर्ग	सहनरुप तपसे	नम	

॥अथ चैत्यवंदन नवपदनो ॥

उप्पन्न सन्नाण महोमयाण । सप्पाडिहेरासण संठिआण ॥ सद्देसणाणंदियसज्जणाण। नमो नमो होउ सया जिणाण ॥ १ ॥ सिद्धाण माणंदरमा लयाण । नमो नमोणंत चउक्कयाण ॥ समग्ग कम्मक्खयकारयाण। जम्मजरादुक्खनिवारयाण ॥२॥ सूरीणदूरीकयकुग्गहाण । नमोनमो सूरसमप्पहाण ॥ सद्देसणादाण समायराण । अखंडछत्तीस गुणाय-राण ॥ ३ ॥ सुत्तथ्थविथ्थरणतप्पराण । नमो नमो वायगकुंजराण ॥ गणस्ससंधारणसायराण ।

सव्वप्पणावद्विय बच्छलस्स ॥ ५ ॥ आइग समरिय मजमाण । नमो नमो उज्झायसयाणं ॥ तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं । दुकंव साधुपवरियाण ॥६॥ जिणुत्ततत्तेरुइलक्खणस्स । नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥ मिच्छत्तनासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्ममहादुमस्स ॥ ३ ॥ अन्नाण समोह तमो हरस्स । नमो नमो नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पगारस्सुवगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थपयासगस्स ॥७॥ आराहियाखंडिय सक्किपस्स । नमो नमो संयम वीरियस्स ॥ सब्भावणा संग विवज्जियस्स । निव्वाण दाणाइ समुज्जयस्स ॥ ८ ॥ कम्मद्दुमुम्मूलण कुंजरस्स । नमो नमो निम्मल तवोभरस्स ॥ अणेगलद्धीण निबंधणस्स । दुस्सज्झ अत्थाण पसाहणस्स ॥ ९ ॥ इयनवपयसिद्धं लद्धिविज्जासमिद्धं । पयडियसरवग्गं हींतिरेहा समग्गं ॥ दिसिवइ सुरसारं खोणिपीढावयारं । तिजग- विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्रस्तवन ॥

नवपदध्यान सदा जयकारी ॥ नवपदध्यान सदा सुखकारी ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक । साधु देखो गुणरूप उदारी ॥

चारित्र हे उत्तम । तप दोय भेदे हृदय विचारी ॥ ॥ नवपद० ॥ २ ॥ मत्रजडीओर तत्र घणेरा । उन सबकु हम दूर विसारी ॥ नवपद० ॥ ३ ॥ घौनजीव भव जलसे तारे । गुण गावनहे बहु नर- नारी ॥ नवपद० ॥ ४ ॥ श्रीजीनभक्त मोहन मुनी वदत । दिनदिन चडते हरख अपारी ॥नवपद०॥ ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ नवपदनी थुई ॥

नितप्रति हु प्रणमु सिद्धचक्र शुभ भाव । हवे कारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय । तुम नाम पसाये आरनि व्याधि पुलाय । इगतुम अनु प्रहथी सुखसपति सुम थाय ॥ १ ॥ श्री अरि- हन नमिये सिद्ध सूरी उवझाय । मुनिवर त्रिक- करणे दसण नाण सुहाय । हुगनिधि चारित्रें दुध विध तपमन भाय । ये नवपदध्याता निरुपम शिवसुखराय ॥ २ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधि- कार । श्रीगुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार । प्रवचन अनुसारे भाख्यो एह विचार । भवि जन नित ध्यावो सुरतरु गुण भंडार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनु रागी चक्केसरि सुखकार । सेवकनें आपे सुख संपति परिवार । हिव निधि उदयकरि चारित्र

नही मन आण । जिनचन्द्रसूरीसर सकल पति
गुणसागर ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ नवपदचैत्य वंदन ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति । अतिसुन्दररूप ।
दीपो सिद्ध अनन्तगुण । आतम गुण भूप ॥ १ ॥
आचारज उवझाय साधु । समतारसधाम । जिन
भाषित सिद्धान्त शुद्ध अनुभव अभिराम ॥ २ ॥
बोधिबीजगुण संपदाए । नाण चरणमय शुद्ध ।
ध्यावो परमानन्दपद । ए नवपद अविरुद्ध ॥ ३ ॥
इह परभव आनन्दकंद । जगमांहि प्रसिद्धौ ।
चिन्तामणि समजाणजोग । बहुपुण्यं लद्धौ ॥ ४ ॥
सिद्धचक्रसार अपार एह महिमा मन धारो । परि
हर परजंजाल सार । निज गुण संभारो ॥ ५ ॥
सिद्धचक्रपद सेवना । सहजानन्द स्वरूप । अमृ
समय कल्याणनिधि । प्रगटे चेतन भूप ॥६॥ इति

॥ अथ नवपद स्तवन ॥

॥राग माड॥ श्रीजिननायक जिनवरजी अतिशयवान अनूप
सिद्धअनन्तमहागुणीजी परमानंद स्वरूप । भविकजन ध्या
वोजी ॥१॥ सार जो नवपदध्यान । भ० । श्रीआचारज-
गण धारे । गुणछत्तीस निधान । पाठक पदधर मुनि
वरजी । श्रुतदायक गुणिठाम । भ० ॥२॥ सुमति गुर-

तिधर सोभताजी । साधुसमना घत । सम्यग् दर्शन सुदरूजी । ज्ञानप्रकाशक अनन्त । भ० ॥ ३ ॥ सवरसाधना चरण उेरे । तप उत्तमविधि होय । ए नवपदना ध्यानथीरे । निरूपाधिक सुख होय । भ० । ॥ ४ ॥ अमृतसमजिन धर्मनोरे । मूल ए नवपदजाण । अविचल अनुभव कारणेजी । नितप्रति नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ नवपदनी थुई ॥

जगनायक दायक सिद्धचक्र सुरकंद, जेहना जप तपथी भाजे भव भय फंद । श्रीपालने मयणा विधिथी ग्तपकीध, नवपदथीपामें अष्टसिद्धनवनिध ॥ १ ॥ जिनसिद्ध आचारिज पाठक श्रीमुनिराज, दर्शनज्ञान चारित्र नवमो तप कहेवाय । एक एक पद ध्यातजीव तर्यासमार चोवीसी प्रणमु कीधो भवि उप गार ॥२॥ आसुयलि चैत्र सुदि सातमथी जाण, ओली कीजेसुभ मन आंबिलकरपचखाण । पदपद नोगुणनो कीजें भावसुजगीस आगममाही बोल्या ध्यावो तुम निसदीस ॥ ३ ॥ विमलादिकदेवादेवी चक्रेसरी जान, सिद्धचक्रना सेवक आपेवछितदान । खरतरगच्छदिनकर श्रीजिनअक्षयसूरिंद तस चरणपसाये भाखे श्रीजिन चद ॥ ४ ॥ इति

अथ नवपद्ओली करणविधि

दिन क्रम	पदना नामो	नवकरवाली	काउस्सग लोगस्स		खमासणा प्रदक्षीणा	वर्ण	भोजन
१	ॐह्रीं नमो अरिहंताण	२०	१२	१२	१२	श्वेत	चोखा
२	,, ,, नमो सिद्धाण	२०	८	८	८	लाल	घउ
३	,, ,, नमो आयरियाण	२०	३६	३६	३६	पीलो	चणा
४	,, ,, नमो उपझायाण	२०	२५	२५	२५	नीलो	मग
५	,, ,, नमो लोए सव्वसाहूण	२०	२७	२७	२७	कालो	अडद
६	,, ,, नमो दसणस्स	२०	६७	६७	६७	श्वेत	चोखा
७	,, ,, नमो नाणस्स	२०	५१	५१	५१	,,	,,
८	,, ,, नमो चारित्तस्स	२०	७०	७०	७०	,,	,,
९	,, ,, नमो तवस्स	२०	५०	५०	५०	,,	,,

शुभमास शुभदिवसमा गुरुमहाराजनी पासे विधि पूर्वक आयीलओलीनी तपस्या ग्रहण करे, पछे आ तप आसो सुदि अने चैत्र सुदि ७ कदाच तीथि घटी होय तो ६ अने वधी होयतो ८ थी पुनम सुधी नव आंबील करे, एम वरसमा बे वार करता साडाचार वरसे नव ओली पूरी करवी, नवदिन सुधी देवसिराइपडिकमणो साज सवारे बे वखत पडिलेहण, गुरुपासे पच्चखाण करे त्रिकाल देवपूजा करे, मध्याने आठथुइथी देव वादे, हमेसा नवपदना नव चैत्यवदन करे जेटला गुण होय तेटला साथीया प्रदक्षिणा काउस्सग्ग करे खमासमणा अने गुणणो हमेशा एकएक पदनो करे एकएक प्रदक्षीणा अने एकएक खमासमणो दइने एकएक गुण कहे, पच्चखाणपारवानो चैत्यवदन करे बाद आंबील करी चैत्यवदन करे सुति वखते सथारापोरिसी भणावीने भूमि सथाराउपर सोवे शीलव्रतपाले इत्यादि नव दिवस सुधी करवो॥ अने काउस्सग करवु होय त्यारे इर्यावही पडिक्कमीने खमासमणो दइने इच्छाकारेणसदिस्सह भगवन्, अमुकपद आराधवा निमित्त काउस्सग करुइच्छ अमुकपद आराधनानिमित करेमिकाउस्सग्ग, वदणवत्तियाए अन्नऊ० पछे काउस्सग करीने प्रगट लोगस्सकहे आतप पूर्ण थया बाद शक्ति अनुसार उजमणु करे ते गुरुमुखथी जाणवु

॥ अथ विशस्थानक तपकरण विधि ॥

सारा दिवसे गुरुने पासे विधि पूर्वक वीशस्थान तपउचरे आतप दशवरषमांहे पूरो करवो आतपनी ओली २० होय छे एकेएक ओली छ मासें पूरी करवी, उपरात भग थाय, एकेएक ओली वीस अठम छठ अथवा उपवासथी थाय छे, दशवर्षे अठमथी करे तो ४०० अठम, छठथी करे तो ४०० छठ, उपवासथी करे तो ४०० उपवास थाय छे अने आंबील नीवींके एकासणाथी पण थाय छे, जे दिवसे उपवास होय ते दिवसे पडिक्कमणो शक्ति होय तो पोषो अथवा देशा वगासिक करवु, देववदन करवु, जेटला जे पदना गुण होय तेटला खमासणा साथीया प्रदक्षीणा अने लोगस्सना काउस्सग करवा, जे पद होय ते पदनी वीश माला दर उपवासे गणवी आतप संपूर्ण थया बाद शक्ति अनुसार उजमणो करे ते गुरुमुखथी जाणवु इति

अंक०	नाम	काउ लोग.	खमा-सणा	सा-थीया	प्रद-क्षीणा	माला
१	नमो अरिहन्ताणं	१२	१२	१२	१२	२०
२	,, सिद्धाणं	३१	३१	३१	३१	२०
३	,, पवयणस्स	२७	२७	२७	२७	२०

४	,,	आपरियाण	३६	३६	३६	३६	२०
५	,,	थेराण	१०	१०	१०	१०	२०
६	,,	उवज्झायाण	२५	२५	२५	२५	२०
७	,,	लोग्गसव्वसाहूण	२७	२७	२७	२७	२०
८	,,	नाणस्स	६१	६१	६१	६१	२०
९	,,	दंसणस्स	६७	६७	६७	६७	२०
१०	,,	विनयसपन्नाण	६२	६२	६२	५२	२०
११	,,	चरित्तस्स	७०	७०	७०	७०	२०
१२	,,	बम्भवयधारीण	१८	१८	१८	१८	२०
१३	,,	किरियाण	२५	२५	२५	२५	२०
१४	,,	तवस्सीण	१२	१२	१२	१२	२०
१५	,,	गोयमस्स	१२	१२	१२	१२	२०
१६	,,	जिणाण	२०	२०	२०	२०	२०
१७	,,	चरणस्स	१७	१७	१७	१७	२०
१८	,,	नाणस्स	६२	६२	६२	५२	२०
१९	,,	सुयनाणस्स	२०	२०	२०	२०	२०
२०	,	तित्थस्स	३८	३८	३८	३८	२०



॥ अथ प्रथम अरिहंतना १२ भेद ॥

१ अशोकवृक्ष प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः
२ पुष्पवृष्टि " "
३ दिव्यध्वनि " "
४ चामरयुग " "
५ स्वर्णसिंहासन " "
६ भामंडल " "
७ दुंदुभि " "
८ छत्रत्रय " "
९ ज्ञानातिशय " "
१० पूजातिशय " "
११ वचनातिशय " "
१२ अपायापगमातिशय " "



॥ अथ बीजा सिद्धपदना ३१ भेद ॥

१ मतिज्ञानावरणि कर्मरहिताय श्रीसिद्धाय नमः
२ श्रुतज्ञानावरणि "
३ अवधिज्ञानावरणि "
४ मनपर्यवज्ञानावरणि "

५ केवल ज्ञानावरणि कर्मरहिताय श्रीसिद्धाय नमः
६ निद्रादर्शनावरणि "
७ निद्रानिद्रादर्शनावरणि "
८ प्रचलादर्शनावरणि "
९ प्रचलाप्रचलादर्शनावरणि "
१० थीणद्धिदर्शनावरणि "
११ चक्षुदर्शनावरणि "
१२ अचक्षुदर्शनावरणि "
१३ अवधिदर्शनावरणि "
१४ केवलदर्शनावरणि "
१५ शातावेदनीय "
१६ अशातावेदनीय "
१७ दर्शनमोहनीय "
१८ चारित्रमोहनीय "
१९ नरकायु "
२० तिर्यंगायु "
२१ मनुष्यायु "
२२ देवायु "
२३ शुभनाम "
२४ अशुभनाम "
२५ उच्चगोत्र "

२६ तीव्र गोत्र कर्मरहिताय श्रीसिद्धाय नमः
२७ दानान्तराय ,,
२८ लाभांतराय ,,
२९ भोगांतराय ,,
३० उपभोगांतराय ,,
३१ वीर्यांतराय ,,



॥ अथ श्रीजापवयण पदना ३७ भेद ॥

१ सर्वतो प्राणातिपातविरताय श्रीप्रवचनाय नमः
२ सर्वतो मृषावादविरताय ,,
३ सर्वतो अदत्तादानविरताय ,,
४ सर्वतो मैथुनविरताय ,,
५ सर्वतो परिग्रहविरताय ,,
६ देशतो प्रणातिपात विरताय ,,
७ देशतो मृषावाद विरताय ,,
८ देशतो अदत्तादान विरताय ,,
९ देशतो मैथुन विरताय ,,
१० देशतो परिग्रह विरताय ,,
११ दिसिपरिमाणव्रत युताय ,,
१२ भोगोपभोगपरिमाणव्रत युताय ,,
१३ अनर्थदंड विरताय ,,

१४ सत्यामिषव्रत संयुताय   श्रीसाधुपदाय नमः
१५ दत्तादानविरमणव्रत संयुताय   ,,
१६ मैथुनविरमणव्रत संयुताय   ,,
१७ अपरिग्रहविरमणव्रत संयुताय   ,,
१८ विधिपूर्वकसमाचार   ,,
१९ दर्शनसूत्रागमाय   ,,
२० भगसूत्रागमाय   ,,
२१ सुमतागमाय   ,,
२२ आराधनागमाय   ,,
२३ उपासगसूत्रागमाय   ,,
२४ उपासगसूत्रागमाय   ,,
२५ सर्वसमयसूत्रावकाय   ,,
२६ स्वसमयपरसमयावकाय   ,,
२७ साधनागोगणितिस्थिताय   ,,



॥ अथ चोथा आचार्यपदना ३६ गुण ॥

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय   श्रीआचार्याय नमः
२ तेजस्वीगुणसंयुताय   ,,
३ युगप्रधानागमसंयुताय   ,,
४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय   ,,

५ गभीरगुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
६ धैर्यगुण सयुताय ,,
७ उपदेसगुण सयुताय ,,
८ अपरिश्रावीगुण सयुताय ,,
९ सौम्यप्रकृतिगुण सयुताय ,,
१० अविग्रहगुण सयुताय ,,
११ अविकथकगुण सयुताय ,,
१२ शीलगुण सयुताय ,,
१३ अचलगुण सयुताय ,,
१४ प्रसन्नवदनगुण सयुताय ,,
१५ क्षमागुण सयुताय ,,
१६ ऋजुगुण सयुताय ,,
१७ मृदुगुण सयुताय ,,
१८ सर्वसगमुक्तिगुण सयुताय ,,
१९ द्वादशविध तपगुण सयुताय ,,
२० सप्तदशविध सजम सयुताय ,,
२१ सत्यव्रतगुण सयुताय ,,
२२ शौचगुण सयुताय ,,
२३ अकिंचनगुण सयुताय ,,
२४ ब्रह्मचर्यगुण सयुताय ,,
२५ अनित्यभावना भावकाय ,,

२६ अशरणभावना भावकाय श्रीआचार्याय नम
२७ ससारस्वरूप भावना भावकाय ,,
२८ एकत्वस्वरूप भावना भावकाय ,,
२९ अन्यत्व भावना भावकाय ,,
३० अशुचि भावना भावकाय ,,
३१ आश्रव भावना भावकाय ,,
३२ संवर भावना भावकाय ,,
३३ निर्जरा भावना भावकाय ,,
३४ लोकस्वरूप भावना भावकाय ,,
३५ बोधिदुर्लभ भावना भावकाय ,,
३६ धर्मदुर्लभ भावना भावकाय ,,



॥ अथ पाचमा स्थविरपदना १० भेद ॥

१ लौकिकस्थविरदेसकाय श्रीलोकोत्तरस्थविराय नम
२ देसस्थविर देसकाय ,,
३ ग्रामस्थविर देसकाय ,,
४ कुलस्थविर देसकाय ,,
५ लौकिकस्थविर देसकाय ,,
६ लौकिक गुरुस्थविर देसकाय ,,
७ लोकोत्तर श्रीसघस्थविराय नम

८ लोकोत्तर श्रीपर्यायस्थविराय नम
९ लोकोत्तर श्रीश्रुतस्थविराय नम
१० लोकोत्तर श्रीवय स्थविराय नम॰



॥ अथ छठा उपाध्याय पद्ना २५ भेद ॥

१ आचारागसूत्र पाठकाय श्रीउपाध्यायाय नम॰
२ सुयगडांगसूत्र पाठकाय ,,
३ ठाणागसूत्र पाठकाय ,,
४ समवायागसूत्र पाठकाय ,,
५ भगवतीसूत्र पाठकाय ,,
६ ज्ञातागसूत्र पाठकाय ,,
७ उपासकदसागसूत्र पाठकाय ,,
८ अतगडदसागसूत्र पाठकाय ,,
९ अनुत्तरोववाइसूत्र पाठकाय ,,
१० प्रश्नव्याकरणसूत्र पाठकाय ,,
११ विपाकसूत्र पाठकाय ,,
१२ उत्पादपूर्व पाठकाय ,,
१३ आग्रायणी पूर्वपाठकाय ,,
१४ वीर्यप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
१५ अस्तिप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,

१६ ज्ञानप्रवाद पूर्वपाठकाय श्रीउपाध्यायाय नमः
१७ सत्यप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
१८ आत्मप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
१९ कर्मप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
२० प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
२१ विद्याप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
२२ अविंध्यप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
२३ प्राणावायप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
२४ क्रियाविशाल पूर्वपाठकाय ,,
२५ लोकबिंदुसार पूर्वपाठकाय ,,



॥ अथ सातमा साधुपदना २७ भेद ॥

१ प्रणातिपातविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः
२ मृषावादविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः
३ अदत्तादानविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः
४ मैथुनविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः
५ परिग्रहविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः
६ रात्रिभोजनविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः
७ पृथ्वी रक्षकाय श्रीसाधवे नमः
८ अप्काय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः

९ तेउकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
१० वाउकायरक्षकाय ,,
११ वनस्पतिकायरक्षकाय ,,
१२ त्रसकायरक्षकाय ,,
१३ एकेंद्रियजीवरक्षकाय ,,
१४ बेंद्रियजीवरक्षकाय ,,
१५ तेंद्रियजीवरक्षकाय ,,
१६ चउरिंद्रियजीवरक्षकाय ,,
१७ पचेंद्रियजीवरक्षकाय ,,
१८ लोभनिग्रहकारकाय ,,
१९ क्षमागुणसयुताय ,,
२० शुभभावनाभावकाय ,,
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्रीसाधवे नमः
२२ सजमयोगसयुताय ,,
२३ मनोगुप्तिसयुताय ,,
२४ वचनगुप्तिसयुताय ,,
२५ कायगुप्तिसयुताय ,,
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय ,,
२७ मरणातउपसर्गसहनतत्पराय ,,

॥ अथ आठमा ज्ञानपदना ५१ भेद ॥

१	स्पर्शेन्द्रियव्यंजनावग्रहाय	श्रीमतिज्ञानाय नमः
२	रसनेन्द्रियव्यंजनावग्रहाय	॥
३	घ्राणेन्द्रियव्यंजनावग्रहाय	॥
४	श्रोत्रेन्द्रियव्यंजनावग्रहाय	॥
५	स्पर्शेन्द्रियअर्थावग्रहाय	॥
६	रसनेन्द्रियअर्थावग्रहाय	॥
७	घ्राणेन्द्रियअर्थावग्रहाय	॥
८	चक्षुरिन्द्रियअर्थावग्रहाय	॥
९	श्रोत्रेन्द्रियअर्थावग्रहाय	॥
१०	मनोअर्थावग्रहाय	॥
११	स्पर्शेन्द्रियईहा	॥
१२	रसनेन्द्रियईहा	॥
१३	घ्राणेन्द्रियईहा	॥
१४	चक्षुरिन्द्रियईहा	॥
१५	श्रोत्रेन्द्रियईहा	॥
१६	मनईहा	॥
१७	स्पर्शेन्द्रियअपाय	॥
१८	रसनेन्द्रियअपाय	॥
१९	घ्राणेन्द्रियअपाय	॥
२०	चक्षुरिन्द्रियअपाय	॥

२१ श्रोत्रेंद्रियअपाय श्रीमतिज्ञानाय नम
२२ मनोअपाय ,,
२३ स्पर्शेंद्रियधारणाय ,,
२४ रसनेंद्रियधारणाय ,,
२५ घ्राणेंद्रियधारणाय ,,
२६ चक्षुरिंद्रियधारणाय ,,
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणाय ,,
२८ मनोधारणाय ,,
२९ श्रीअक्षरश्रुतज्ञानाय नमः
३० श्रीअनक्षरश्रुतज्ञानाय नमः
३१ श्रीसज्ञिश्रुतज्ञानाय नमः
३२ श्रीअसज्ञिश्रुतज्ञानाय नमः
३३ श्रीसम्यग्श्रुतज्ञानाय नमः
३४ श्रीमिथ्याश्रुतज्ञानाय नम
३५ श्रीसादीश्रुतज्ञानाय नमः
३६ श्रीअनादिश्रुतज्ञानाय नमः
३७ श्रीसपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः
३८ श्रीअपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नम
३९ श्रीगमिकश्रुतज्ञानाय नमः
४० श्रीअगमिकश्रुतज्ञानाय नमः
४१ श्रीअगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नम

४२ श्रीअनगमिष्टश्रुतज्ञानाय नम॰
४३ श्रीअनुगामिक अवधिज्ञानाय नमः
४४ श्रीअननुगामिक अवधिज्ञानाय नम
४५ श्रीवर्द्धमान अवधिज्ञानाय नम॰
४६ श्रीहीयमान अवधिज्ञानाय नम॰
४७ श्रीप्रतिपाति अवधिज्ञानाय नम
४८ श्रीअप्रतिपाति अवधिज्ञानाय नम
४९ श्रीऋजुमतिमन पर्यवज्ञानाय नम
५० श्रीविपुलमतिमन पर्यवज्ञानाय नम
५१ श्रीलोकालोकप्रकाशक केवलज्ञानाय नम॰



॥ अथ नवमा दर्शनपदना ६७ भेद ॥

१ परमार्थसंस्तवरूप	श्रीसद्दर्शनाय नम॰
२ परमार्थ ज्ञातृसेवनरूप	"
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप	"
४ कुदर्शनवर्जनरूप	"
५ शुश्रूषारूप	"
६ धर्म रूप	"
७ वेया	"
८ अर्ह रूप	"

९ सिद्धविनयरूप - श्रीमद्दर्शनाय नम
१० चैत्य विनयरूप ,,
११ श्रुत विनयरूप ,,
१२ धर्म विनयरूप ,,
१३ साधुवर्ग विनयरूप ,,
१४ आचार्य विनयरूप ,,
१५ उपाध्याय विनयरूप ,,
१६ प्रवचन विनयरूप ,,
१७ दर्शन विनयरूप ,,
१८ ससारे जिनसारमिति चिंतवनरूप ,,
१९ ससारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप ,,
२० ससारे जिनमत स्थित साध्वा-
दिसारमिति चिंतवनरूप ,,
२१ शका दूषण रहिताय ,,
२२ काक्षादूषणरहिताय ,,
२३ विचिकित्सारूप दूषणरहिताय ,,
२४ कुदृष्टिप्रशसारूप,दूषणरहिताय ,,
२५ कुदृष्टिपरिचयदूषण रहिताय ,,
२६ प्रवचन प्रभावकरूप ,,
२७ धर्मकथा प्रभावकरूप ,,
२ वादि प्रभावकरूप ,,

२९ नैमितिकप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३० तपस्विप्रभावकरूप ,,
३१ प्रज्ञप्त्या दिविद्याभृत् ,,
३२ चूर्णाजनादिसिद्ध प्रभावकरूप ,,
३३ कवि प्रभावकरूप ,,
३४ जिनशासने कौशलभूषणरूप ,,
३५ प्रभावना भूषणरूप ,,
३६ तीर्थसेवा भूषणरूप ,,
३७ धैर्य भूषणरूप ,,
३८ जिनशासने भक्ति भूषणरूप ,,
३९ उपशम गुणरूप ,,
४० सवेग गुणरूप ,,
४१ निर्वेद गुणरूप ,,
४२ अनुकंपा गुणरूप ,,
४३ आस्तिक्य गुणरूप ,,
४४ परतीर्थिकादिवदनवर्जनरूप ,,
४५ परतीर्थिकादि नमस्कारवर्जनरूप ,,
४६ परतीर्थिकादि आलापवर्जन ,,
४७ परतीर्थिकादि सलापवर्जनरूप ,,
४८ परतीर्थिकादि अशनादि दानवर्जनरूप ,,
४९ परतीर्थिकादि गधपुष्पादि प्रेषण वर्जनरूप

५० राजाभियोगआगारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः
५१ गणाभियोगआगारयुक्त ,,
५२ बलाभियोगआगारयुक्त ,,
५३ सुराभियोगआगारयुक्त ,,
५४ कांतारवृत्त्यागारयुक्त ,,
५५ गुरु निग्रहागारयुक्त ,,
५६ सम्यक्त्व चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतवन रूप श्रीसद्दर्शनाय नम
५७ सम्यक्त्व चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमिति चिंतवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
५८ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठान मिति चिंतवनरूप ,,
५९ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य धार मिति चिंतवनरूप ,,
६० सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य भाजन मिति चिंतवनरूप ,,
६१ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य निधि सन्निभमिति चिंतवनरूप ,,
६२ अस्ति जीवेति श्रद्धान स्थानयुक्त ,,
६३ नजीवो नि येति श्रद्धान स्थानयुक्त ,,
६४ स च जीव कर्माणि करोतीति

श्रद्धा न स्थानयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नम

६५ न च जीव कृत कर्माणि वेदयतीति

श्रद्धा न स्थानयुक्त ,,

६६ जीवस्यास्तिनिर्वाणमिति

श्रद्धा न स्थान युक्त ,,

६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धा न स्थान युक्त

श्रीसद्दर्शनाय नमः

॥अथ दशमाविनयपदना ५२ भेद ॥

१ श्रीतीर्थंकरस्याना शातनारूप विनयधराय नम

२ श्रीतीर्थंकरस्यभक्ति करणरूप ,,

३ श्रीतीर्थंकरस्य बहुमान करणरूप ,,

४ श्रीतीर्थंकरस्य स्तुति करणरूप ,,

५ श्रीसिद्धस्यानाशातनारूप ,,

६ श्रीसिद्धस्यभक्तिकरणरूप ,,

७ श्रीसिद्धस्यबहुमानकरणरूप ,,

८ श्रीसिद्धस्य स्तुतिकरणरूप ,,

९ श्रीसुविहितचंद्रादि-कुलानाशातना रूप ,,

१० श्रीसुविहितचन्द्रादिकुलभक्तिकरणरूप
विनयगराय नम.

११ श्रीसुविहितचन्द्रादिकुलबहुमान करणरूप ,,

१२ श्रीसुविहितचन्द्रादिकुलस्तुति करणरूप ,,

१३ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्नसुविहि-तानाशातनाकरणरूप ,,

१४ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित भक्तिकरणरूप ,,

१५ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहिता बहुमानकरणरूप ,,

१६ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित स्तुतिकरणरूप ,,

१७ श्रीचतुर्विधसघानाशातनारूप ,,

१८ श्रीचतुर्विधसघभक्तिकरणरूप ,,

१९ श्रीचतुर्विधसघबहुमानकरणरूप ,,

२० श्रीचतुर्विधसघस्तुतिकरणरूप ,,

२१ श्रीशुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्याना शातनाकरणरूप ,,

२२ श्रीशुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्यभक्ति करणरूप ,,

२३ श्रीशुद्धागमोक्त क्रिया कारकस्य बहु-
मान करण रूप विनयधराय नम
२४ श्रीशुद्धागमोक्त क्रिया कारकस्य
स्तुति करण रूप ,,
२५ श्रीजिनोक्तधर्मस्यानाशातनाकरणरूप ,,
२६ श्रीजिनोक्तधर्मस्यभक्तिकरणरूप ,,
२७ श्रीजिनोक्तधर्मस्यबहुमानकरणरूप ,,
२८ श्रीजिनोक्तधर्मस्यस्तुतिकरणरूप ,,
२९ श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्यानाशातनाकरणरूप ,,
३० श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्यभक्तिकरणरूप ,,
३१ श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्यबहुमानकरणरूप ,,
३२ श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्यस्तुतिकरणरूप ,,
३३ श्रीज्ञानानाशातनाकरणरूप ,,
३४ श्रीज्ञानभक्तिकरणरूप ,,
३५ श्रीज्ञानबहुमानकरणरूप ,,
३६ श्रीज्ञानस्तुतिकरणरूप ,,
३७ श्रीआचार्यस्यानाशातनाकरणरूप ,,
३८ श्रीआचार्यस्यभक्तिकरणरूप ,,
३९ श्रीआचार्यस्यबहुमानकरणरूप ,,
४० श्रीआचार्यस्यस्तुतिकरणरूप ,,
४१ ,,

४२ श्रीस्थविरस्य भक्ति करण रूप विनयधराय नम
४३ श्रीस्थविरस्य बहुमान करणरूप ,,
४४ श्रीस्थविरस्यस्तुति करणरूप ,,
४५ श्रीउपाध्यायस्याना शातना करणरूप ,,
४६ श्रीउपाध्यायस्य भक्ति करणरूप ,,
४७ श्रीउपाध्यायस्य बहुमान करणरूप ,,
४८ श्रीउपाध्यायस्य स्तुति करणरूप ,,
४९ श्रीगणावच्छेदकस्याना शातना करणरूप ,,
५० श्रीगणावच्छेदकस्य भक्ति करणरूप ,,
५१ श्रीगणावच्छेदकस्य बहुमान करणरूप ,,
५२ श्रीगणावच्छेदकस्य स्तुति करणरूप ,,



॥अथ इग्यारमा चारित्रपदना ७० भेद ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप श्रीचारित्राय नम
२ मृषावाद विरमण रूप ,,
३ अदत्तादान विरमण रूप ,,
४ मैथुन विरमण रूप ,,
५ परिग्रह विरमण रूप ,,
६ क्षमा धर्म रूप ,,
७ आर्जव रूप ,,
८ मार्दव धर्म रूप ,,

९ मुक्ति धर्म रूप	चारित्राय नमः
१० तपो धर्म रूप	"
११ संयम धर्म रूप	"
१२ सत्य धर्म रूप	"
१३ शौच धर्म रूप	"
१४ अकिंचन धर्म रूप	"
१५ ब्रह्म धर्म रूप	"
१६ पृथवी रक्षा सयम	"
१७ उदक रक्षा सयम	"
१८ तेऊ रक्षा सयम	"
१९ वाऊ रक्षा सयम	"
२० वनस्पति सयम	"
२१ बेंद्रिय रक्षा सयम	"
२२ तेंद्रिय रक्षा सयम	"
२३ चउरिंद्रिय रक्षा सयम	"
२४ पचेंद्रिय रक्षा सयम	"
२५ अजीव रक्षा सयम	"
२६ प्रेक्षा सयम	"
२७ उपेक्षा सयम	"
२८ अतिरिक्त वस्त्रभक्तादि परठण त्यागरूप	"
, प्रमार्जन रूप सयम	"

३० मन संयम	श्रीचारित्राय नम
३१ वाग् संयम	"
३२ काय संयम	"
३३ आचार्य वैयावृत्यरूप	"
३४ उपाध्याय वैयावृत्यरूप	"
३५ तपस्वि वैयावृत्यरूप	"
३६ लघुशिष्यादिवैयावृत्यरूप	"
३७ ग्लानसाधुवैयावृत्यरूप	"
३८ साधुवैयावृत्यरूप	"
३९ श्रमणोपासकवैयावृत्यरूप	"
४० संघवैयावृत्यरूप	"
४१ कुलवैयावृत्य रूप	"
४२ गणवैयावृत्यरूप	"
४३ पशुपंडकादिरहितवसतिरमनब्रह्मगुप्त	"
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्त	"
४५ स्त्रीआसनवर्जनब्रह्मगुप्त	"
४६ स्त्रीअंगोपांगनिरीक्षणवर्जनब्रह्मगुप्त	"
४७ कुड्यन्तरसहितस्त्रीहावभावश्रवणब्रह्मगुप्त	"
४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्त	"
४९ अतिसरसाहारवर्जनब्रह्मगुप्त	"
५० अतिआहारकरणवर्जनब्रह्मगुप्त	"

५१ अगनिभूपारजैनव्रतगुप्त	श्रीचारित्राय नमः
५२ अनशनतपोरूप	,,
५३ उनोदरितपोरूप	,,
५४ वृत्तिसक्षेपनपोरूप	,,
५५ रसत्यागतपोरूप	,,
५६ कायकिलेशतपोरूप	'
५७ सलीनतातपोरूप	,
५८ प्रायश्चित्ततपोरूप	,,
५९ विनयतपोरूप	,,
६० वैयावच्चतपोरूप	,,
६१ सज्झायतपोरूप	,,
६२ ध्यानतपोरूप	,,
६३ उपसर्गतपोरूप	,,
६४ अनतज्ञानसयुत	,,
६५ अनतदर्शनसयुत	,,
६६ अनतचारित्रसयुत	,,
६७ क्रोधनिग्रहकरणरूप	,,
६८ माननिग्रहकरणरूप	,,
६९ मायानिग्रहकरणरूप	,,
७० लोभनिग्रहकरणरूप	,,



अथवारमा ब्रह्मचर्य पदना १८ भेद

१ मनसाओदारिकविषयअसेवनरूप श्रीब्रह्मचारिणे नम
२ मनसाओदारिकविषयकअसेवावनरूप ,,
३ मनसाओदारिकविषयअनानुमोदनरूप ,,
४ वचसाओदारिकविषयअसेवनरूप ,,
५ वचसाओदारिकविषयअसेवायनरूप ,,
६ वचसाओदारिकविषयअनानुमोदनरूप ,,
७ कायेनओदारिकविषयअसेवनरूप ,,
८ कायेनओदारिकविषयअसेवायनरूप ,,
९ कायेनओदारिकविषयअनानुमोदनरूप ,,
१० मनसावैक्रियविषयअसेवनरूप ,,
११ मनसावैक्रियविषयअसेवावनरूप ,,
१२ मनमावैक्रियविषयअनानुमोदनरूप ,,
१३ वचसावैक्रियविषयअसेवनरूप ,,
१४ वचसावैक्रियविषयअसेवावनरूप ,,
१५ वचसावैक्रियविषयअनानुमोदनरूप ,,
१६ कायेनवैक्रियअमेवनरूप ,,
१७ कायेनवैक्रियविषयअसेवावनरूप ,,
१८ कायेनवैक्रियविषयअनतुमोदनरूप ,,



अथ तेरमा क्रियापदना २५ भेद।

१ अशुद्धकायकीक्रियानिवर्त्तनरूप श्रीक्रियायते नम
२ अधिकरणकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
३ परितापकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
४ प्राणातिपातकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
५ आरम्भिकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
६ परिग्रहकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
७ मायाप्रत्ययिकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
८ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
९ अपच्चक्खाणकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
१० दृष्टिकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
११ स्पष्टिकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
१२ प्रातीत्यकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
१३ सामतोपनिपातकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
१४ नैसृष्टिकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
१५ स्वहस्तिकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
१६ आणवणीक्रियानिवर्तनरूप ,,
१७ विदारणिकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
१८ अनाभोगप्रत्ययिकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
१९ अणवकङ्खप्रत्ययिकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
२० आज्ञापनप्रत्ययिकीक्रियानिवर्तनरूप ,,

२१ प्रयोगकीक्रियानिवर्तनरूप श्रीक्रियावते नम
२२ समुदायिकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
२३ प्रेमकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
२४ द्वेषकीक्रियानिवर्तनरूप ,,
२५ इरियापथिकीक्रियानिवर्तनरूप ,,



॥ अथ चउदमा पद तपसीणना १२ भेद ॥

१ अणसणतपरूप श्रीबाह्यतपसे नम
२ उणोदरीतपरूप ,,
३ वृत्तिसंक्षेपतपरूप ,,
४ रसत्यागतपरूप ,,
५ कायक्लेशतपरूप ,,
६ सलीनतातपरूप ,,
७ प्रायश्चितनपरूप श्रीअभ्यन्तरतपसे नम
८ विनयतपरूप ,,
९ वैयावृत्यतपरूप ,,
१० सज्झायतपरूप ,,
११ आत्मध्यानतपरूप ,,
१२ काउस्सग्गतपरूप ,,



अथ पनरमा गौतमपदना १२ भेद

१ श्रीगौतमस्वामि	गणधराय नमः
२ श्रीअग्निभूतिस्वामि	,,
३ श्रीवायुभूतिस्वामि	,,
४ श्रीव्यक्तस्वामि	,,
५ श्रीसुधर्मास्वामि	,,
६ श्रीमंडितस्वामि	,,
७ श्रीमौर्यपुत्रस्वामि	,,
८ श्रीअकंपितस्वामि	,,
९ श्रीअचलभ्रातास्वामि	,,
१० श्रीमेतार्यस्वामि	,,
११ श्रीप्रभासस्वामि	,,
१२ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकराणांचतुर्दशशत-द्विपंचाशत्	गणधरेभ्यो नमः



अथ सोलमा जिणाणपदना २० भेद

१ श्रीसीमंधरस्वामि	जिनेश्वराय नमः
२ श्रीयुगमंधरस्वामि	,,
३ श्रीबाहुस्वामि	,,
४ श्रीसुबाहुस्वामि	,,
५ श्रीसुजातस्वामि	,,

६ श्रीस्वयप्रभस्वामि जिनेश्वराय नम
७ श्रीऋषभाननस्वामि ,,
८ श्रीअनतवीर्यस्वामि ,,
९ श्रीसूरप्रभस्वामि ,,
१० श्रीविशालस्वामि ,,
११ श्रीवज्रधरस्वामि ,,
१२ श्रीचद्राननस्वामि ,,
१३ श्रीचद्रबाहुस्वामि ,,
१४ श्रीभुजगस्वामि ,,
१५ श्रीईश्वरस्वामि ,,
१६ श्रीनमिप्रभस्वामि ,,
१७ श्रीवीरसेनस्वामि ,,
१८ श्रीमहाभद्रस्वामि ,,
१९ श्रीदेवयसास्वामि ,,
२० श्रीअजितवीर्यस्वामि जिनेश्वराय नम

अथ सतरमा सजम पदना १७ भेद

१ प्राणातिपातविरताय श्रीसंयमधराय नम
२ मृपावादविरताय ,,
३ अदत्तादानविरताय ,,
४ मैथुनविरताय ,,

५ परिग्रहविरताय श्रीसंयमधराय नमः
६ रात्रिभोजनविरताय ,,
७ इर्यासमितिसयुताय ,,
८ भाषासमितिसयुताय ,,
९ एषणासमितिसयुताय ,,
१० आदानभंडमत्तनिक्खेवणासमितिसयुताय ,,
११ पारिठावणियासमितिसयुताय ,,
१२ मनोगुप्तिसयुताय ,,
१३ वचनगुप्तिसयुताय ,,
१४ कायगुप्तिसयुताय ,,
१५ मनोदंडविरताय ,,
१६ वचनदंडविरताय ,,
१७ कायदंडविरताय ,,



अथ अढारमा ज्ञानपदना ५१ भेद

१ श्रीआचारांग श्रुतज्ञानाय नमः
२ श्रीसूयगडांग ,,
३ श्रीठाणांग ,,
४ श्रीसमवायांग ,,
५ श्रीभगवतीअंग ,,
६ श्रीज्ञाताधर्मकथांग ,,

७ श्रीउपाशकदशाग	श्रुतज्ञानाय नमः
८ श्रीअतगडदशाग	”
९ श्रीअनुत्तरोववाइअग	”
१० श्रीप्रश्नव्याकरणाग	”
११ श्रीकर्मविपाकश्रुताग	”
१२ श्रीउववाइउपाग	”
१३ श्रीरायपसेणीउपाग	”
१४ श्रीजीवाभीगमउपाग	”
१५ श्रीपन्नवणाउपाग	”
१६ श्रीजम्बूद्वीपपन्नतिउपाग	”
१७ श्रीचन्द्रपन्नत्तिउपाग	”
१८ श्रीसूरपन्नत्तिउपाग	”
१९ श्रीनिरियावलीउपाग	”
२० श्रीपुष्फियाउपाग	”
२१ श्रीपुष्फचूलियाउपाग	”
२२ श्रीकप्पियाउपाग	”
२३ श्रीवह्निदसाउपाग	”
२४ श्रीचउसरणपयन्नो	”
२५ श्रीआउरपचक्खाणपयन्नो	”
२६ श्रीभत्तपरिन्नापयन्नो	”
२७ श्रीमहापचक्खाणपयन्नो	”

२८ श्रीतंदुलवैयालियपयन्नो श्रुतज्ञानाय नम
२९ श्रीचंदाविजयपयन्नो ,,
३० श्रीगणिविद्यापयन्नो ,,
३१ श्रीमरणसमाधिपयन्नो ,,
३२ श्रीसंथारापयन्नो ,,
३३ श्रीदेवेंद्रस्तवपयन्नो ,,
३४ श्रीदशवैकालिकमूल ,,
३५ श्रीआवश्यकमूल ,,
३६ श्रीपिंडनिर्युक्तिमूल ,,
३७ श्रीउत्तराध्ययनमूल ,,
३८ श्रीनिसीथछेद ,,
३९ श्रीबृहत्कल्पछेद ,,
४० श्रीव्यवहारछेद ,,
४१ श्रीपंचकल्पछेद ,,
४२ श्रीजीतकल्पछेद ,,
४३ श्रीमहानिसीथछेद ,,
४४ श्रीनंदीसूत्र ,,
४५ श्रीअनुयोगद्वार ,,
४६ श्रीस्यादस्तिभंगप्ररूपकायस्याद्वाद ,,
४७ श्रीस्यान्नास्तिभंगप्ररूपकायस्याद्वाद ,,
४८ श्रीस्यादस्तिस्यान्नास्तिभंगप्ररूप-

कायस्याद्वाद
४९ श्रीस्यादवक्तव्यभंगप्ररूपकस्याद्वाद
५० श्रीस्यादस्तिअवक्तव्यभंगप्ररू-
कायस्याद्वाद
५१ श्रीस्यान्नास्तिअवक्तव्यभंगप्ररू-
कायस्याद्वाद
५२ श्रीस्यादस्तिस्यान्नास्तिअवक्त-
भंगप्ररूपकायस्याद्वाद

अथ ओगणीसमा श्रुतरत्न

१ पर्याय
२ श्रीपर्यायसमास
३ श्रीअक्षर
४ श्रीअक्षरसमास
५ श्रीपद
६ श्रीपदसमास
७ श्रीसघात
८ श्रीसघातसमास
९ श्रीप्रतिपत्ति
१० श्रीप्रतिपत्तिसमास
११ श्रीअनुयोग

१२ श्रीअनुयोगसमास	श्रुतज्ञानाय नम
१३ श्रीपाहुडपाहुडा	,,
१४ श्रीपाहुडपाहुडासमास	,,
१५ श्रीपाहुडा	,,
१६ श्रीपाहुडासमास	,,
१७ श्रीवस्तु	,,
१८ श्रीवस्तुसमास	,,
१९ श्रीपूर्व	,,
२० पूर्वसमास	,,
	,,

अथ वीसमा तीर्थपदना ३८ भेद

१ प्राणातिपातविरतिवत	श्रीसाधुतीर्थाय नम॰
२ मृषावादविरतिवत	,,
३ अदत्तादानविरतिवत	,,
४ मैथुनविरतिवत	,,
५ परिग्रहविरतिवत	,,
६ पृथवीकायजीवरक्षाकाय	,,
७ अप्कायजीवरक्षाकाय	,,
८ तेउकायजीवरक्षकाय	,,
९ वाउकायजीवरक्षकाय	,,
१० वनस्पतिकायजीवरक्षकाय	,,

११ त्रसकायजीवरक्षकाय	श्रीसाधुतीर्थाय नमः
१२ क्रोधदोषरहिताय	,,
१३ मानदोषरहिताय	,,
१४ मायादोषरहिताय	,,
१५ लोभदोषरहिताय	,,
१६ रागाशदोषरहिताय	,,
१७ द्वेषाशदोषरहिताय	,,
१८ लज्जागुणयुताय	श्रीदेशविरतितीर्थाय नम
१९ दयागुणयुताय	,,
२० मध्यस्थगुणयुताय	,,
२१ सौम्यगुणयुताय	,,
२२ गुणरागरूप	,,
२३ अक्षुद्रतागुणयुताय	,,
२४ धर्मप्रभावकगुणयुताय	,,
२५ सौम्यप्रकृतिगुणयुताय	,,
२६ जनप्रियगुणयुताय	,,
२७ मनोज्ञरूपगुणयुताय	,,
२८ पापभीरुगुणयुताय	,,
२९ असठगुणयुताय	,,
३० दाक्षिन्यतागुणयुताय	,,
३१ अक्रूरतागुणयुताय	,,

३२ सत्कथकगुणयुताय	श्रीदेशविरतितीर्थाय नम
३३ सुपक्षगुणयुताय	"
३४ दीर्घदर्शिगुणयुताय	"
३५ विशेषज्ञगुणयुताय	"
३६ वृद्धानुगामिगुणयुताय	"
३७ विनयगुणयुताय	"
३८ कृतज्ञतागुणयुताय	"

॥ अथ वीसस्थानक चैत्यवंदन ॥

अतिशयवंत महंत रूप, अनुपम गुणधारी । आराधे जिनकु सकल, तीर्थंकर शिवगामी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन गणी, स्थिर वहु श्रुत ज्ञान । तपसी श्रुत दर्शन विनय आवश्यकवली दान ॥२॥ शील क्रिया तप धारिए, वैयावच समाधि । ज्ञान ग्रहण श्रुत भक्ति तीर्थ, सेवन त्याग उपाधि ॥ ३ ॥ ए विंशति स्थानक अमल, सेवो सरधा युक्त । परमातम संपद प्रगट, कारक वचन मुक्त, ॥ ४ ॥ मनवंछित सह सिद्धि कर, क्षायिक सुख भर कंद । जिनको वंदे भावधर, श्रीकुशलेंदु गणींद ॥ ५ ॥



॥ अथ बीसस्थानक थुइ ॥

निरमल आतम भाव प्रकाशक, कारक क्षायिक भावोजी । जिनपद बंधक कर्म निकंदक, बीस स्थानक भवी सेवोजी ॥ जिनवर सह जे स्थानक सेवे, एक अनेक भव सीजेजी । आराधन ते साधन भावे, भव बंधन सब छीजेजी ॥ १ ॥ अरिहन्त सिद्ध प्रवचन आचारज, स्थविर पढ़ श्रुत तपसीजी । श्रुत दरसन विनयी आवश्यक, शील क्रिया तप वासीजी । गणधर वैयावच सुसमाधि, ज्ञान ग्रहण श्रुत भगतीजी । प्रवचन प्रभावति पद भावक, जिन नमिए सह जुगतीजी ॥२॥ अठम छठ उपवास आंबील तप, एकाशन निज सगतेजी । करिए ओलीपदमास भीतर, आराधन बहु भगतेजी । आरम्भ टाली पोषधधारी, दोय सहस जप गणिएजी । काउस्सग्ग निज पद परिमाणे, देवपूजन श्रुत भणिएजी ॥ ३ ॥ शासन रक्षक समकितधारि, जे सहसुर सुरि वृन्दाजी । सान्निध कर ज्यो ते तप करता, वधते भाव अमन्दाजी । श्रीजिनलाभसूरीश्वर शाखा, श्रीकुशलेंदु गणींदाजी । तस पद सेवक सहलमतिगणी, जंपे श्रीपालचन्द्राजी ॥४॥ इति

॥ अथ वीसस्थानकनु स्तवन ॥

वीसस्थानक पद सेवीये, धरिकरी शुभभाव लालरे। त्रीजे भव सेव्यो थको, बांधे तीर्थकर नाम लालरे वीस० ॥१॥ तपश्चर्या अधिकी कही, ज्ञाना आगमसार लालरे। सुण ज्यो भवी तुमें भावसु, किंचित करिये उचार लालरे। वीस० ॥२॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहे, वीसस्थानक तप एह लालरे। निरदूषण शुभ मुहरते, उचरि जे ससनेह लालरे ॥ वीस० ॥३॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन नमु, सूरि स्थविर उपज्झाय लालरे। साधुनाण दसण अरू, विनय नमु उलसाय लालरे ॥ वीस० ॥४॥ चारित्र बभ क्रियापदे, नव गोयम जिण ईस लालरे चारित्र ज्ञानने श्रुतभणी, नमु तीर्थ पद वीस लालरे ॥ वीस० ॥५॥ वीस दिवसमें एकही, पदगुणनो कर सेव लालरे। अथवा दिन वीशालगे, वीशे पद गुण सेव लालरे। वीस० ॥ ६ ॥ एक ओलीपट्मासमें, पूरी जो नवि होय लालरे। फिर नवि करणी पडे, पीछली निष्फल होय लालरे ॥ वीस० ॥७॥ छठ अठम उपवाससु, अथवा देखी शक्ति लालरे। पोषध करी आराधीये, देव वांदे निज भक्ति लालरे ॥ वीस० ॥ ८ ॥ सपूर्ण पद सेवता, पोषधनो नही जोग लालरे। तांहि सात पदे सही पोषध करीये सजोग लालरे ॥ वी० ॥९॥

सूरिस्थविर पाठक पदे साधु चारित्र सुजाण लालरे। गोतम तीर्थ पदे सहि, सात स्थानक मनमान लालरे॥ वीस० ॥ १० ॥ पदपद दीठ करे सदा, दोय दोय जाप हजार लालरे। पडिक्कमणो दोय टकनी, करिये पूजा सार लालरे॥ ११ ॥ शक्ति सुजस तप कीजीये, एक ओली करो वीस लालरे। वीशावीशीं च्यारसें, तप संख्या कही एम लालरे॥ वीस० ॥ १२ ॥ जिम दिन जो पद तप करे, तिसके गुण चित्तधार लालरे। काउस्सग्ग परदक्षणा, मुख भणिये नवकार लालरे॥ वीस० ॥१३॥ जिम पदकी स्तवना सुणे, कीजे जिन पद भक्ति लालरे। गुरुजोगो कीजीये, खरची जे धन शक्ति लालरे॥ वीस० ॥ १४ ॥ सूतक जनम ऋतुकालमें, पली धार्यों उपवास लालरे। सो लेखे नही लेखवो, नि केवल तपजास लालरे ॥ वीस ॥१५॥ सावद्य त्याग पणो करे, शोक न धारे चित्त लालरे। शील आभूषण आदरे, मुखसु बोले सत्य लालरे॥ वीस० ॥१६॥ जेठ आषाढ वैशाखमें, मिगशिर फाल्गुन माह लालरे। ए षट् मासे माहिने, तप ग्रहीये बड भाग लालरे॥ वीस० ॥१७॥ तप पूरण हुवा थका, उजमणो निरधार लालरे। कीजे शक्ति विचारीने, उच्छव विविध प्रकार लालरे॥ वीस० ॥ १८ ॥ वीशवीश गणती तणा, पुस्तक पुठा

आदि लालरे ॥ वीस० ॥१९॥ फलोधी नगरनी श्राविका निविध चित्तलाय लालरे । जनम सफल करवा भणी, एहीज मोक्ष उपाय लालरे ॥ वीस० ॥२०॥

कलश

इय वीर जिनवर तणी, आज्ञा धारे चित्तमहार ए । सहु देव आगम तणी, रचना कवि तप विध सारए । वसु निधिसिद्धिससी वरस, उजल चैत्रमास सुर करु। मुनि केशरीचंद गच्छखरतर, भणी स्तवना मनहरु ।२१।

॥ अथ दीवालीपर्वनु गुणणो ॥

१ श्रीमहावीरस्वामि सर्वज्ञाय नमः । रात्रे बीजा प्रहरे
२ श्रीमहावीरस्वामि पारगताय नमः । रात्रे त्रीजा प्रहरे
३ श्रीगौतमस्वामि सर्वज्ञाय नमः । रात्रे चोथा प्रहरे

आ गुणणानी दीवालीनें रात्रे वीस वीस नवकार वाली गणवी अठम करे तो तेरसथी, छठ करे तो चउदसथी उपवास करे तो दीवालीनें रोज तप करे, रात्रि जोगो करे, अने प्रभु निर्वाण समये देरासरमा जइनें लाडु आदि अष्ट द्रव्य चडावे, आरती करे, चैत्य वदन करे, दीवालीनो स्तवन कहे, निर्वाण कल्याणकनो अधिकार सुणे, अने श्रीगौतमस्वामिनो मोटो रास सामले पछे पारणो करे, इति

॥ अथ ज्ञानपचमी पर्व अधिकार ॥

कार्तिक सुदि पचमी ज्ञान पचमी नामथी पर्व कहेवाय छे आ पर्व आराधन करवाथी गुणमजरी अने वरदत्तनी माफक ज्ञानावरणी कर्म नाश थाय छे, कोढादि द्रव्य रोग नाश थाय छे, सर्व उपद्रव नाश थाय छे, संपूर्ण मनोरथ पूर्ण थाय छे

ज्ञानपचमीनु उपवास सुदिमा करवो कदाच रोगादिक कारणे अने भूली जाय तो वदिमा करवो, ज्ञान पंचमीनु तप जघन्यथी पाच मास, मध्यमथी पाच वर्ष अने पाच मास अने उत्कृष्टथी जाव जीव सुधी थाय छे, उपवास चोविहार करवो चोवीहार न बनी शके तो तिविहार करे, जघन्यमध्यमउत्कृष्ट ज्ञानपचमीनु तप न बनी शके तो अवश्य कार्तिकशुदि पचमीनो तो उपवास करवो, ते दिवसे शणगारेली ज्ञान कोटडीने आगल पाच अथवा एकावन साथीया करीने तेना उपर फल फुल चढाववा, पाच बत्तीनो दीवो करवो, धूप उखेववो ज्ञान पूजानी ढाल कहीने वासक्षेप करे पुस्तक पर रोकड नाणो चढावे, अने कागल कलम सलेट पेन शीसापेन दवात आदि चढावे द्रव्यपूजा करीने भावपूजा करवी ते प्रथम इरियावहि पडिकमीने खमा० दइने मुहपत्ति पडिलेहीने बे वांदणा पाच खमासमणा दइने चैत्यवदन करे.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

सकल वस्तु प्रतिभास भानु, निरमल सुख कारण। सम्यग्दर्शन पुष्ट हेतु, भव जलनिधि तारण ॥ संजम तप आणंद कंद, अन्नाण निवारण। मार विकार प्रचार ताप, तापित जन ठारण ॥१॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म, परिणति पडिबोहण। साहु साहुणी सघ सर्व, आराधन सोहण। मोहतिमिर विभ्रम, सूर मिथ्यात्व पणासण आतम शक्ति अनंत शुद्ध, प्रभुता परगासण ॥२॥ मति श्रुति अवधि विशुद्धनाण, मणपज्जव केवल। भेद पंचास क्षयोपशमिक, एक क्षायक निरमल। दोय परोक्ष प्रथम तिहां, दुग परतक्ष दीसना सकल परतक्ष प्रकाश भास, ध्रुव केवल अपरिमित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध, श्रीपदी जिन भाखे। बाहिर अंग प्रधान स्कंध, गणधर सुप्रकाशे। शाखा श्रीनिर्युक्ति भाष्य, पडिशाखा दीपे। चूरणी टीका पत्र पुष्प, सशय भव जीपे ॥४॥ पचांगी सार बोध कह्यो, जिन पंचम अंगे। नंदी अनुयोगद्वार, शाखा मानो मनरंगे। वीर परंपर जीत, भव उपगारी। अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोह पकहर नीरसम, सिद्धांत अबाधे। देवचंद्र आणा सहित नय भंग अगाधे ज्ञान सोहामणो, सकल मोक्ष सुख कंद। भगते सेवो भविकजन, पामो परमानंद ॥ ६ ॥

जकिंचि० नमुत्थुण० जावंति चेइयाइं० जावतकेवि० नमोर्हत० प्रणमु श्रीगुरुपाय० ज्ञानपंचमिनु स्तवन जयवीय० अरिहंत चेइयाण० वंदण० अन्नत्थ० एक नवकारनु काउस्सग्ग करीने थुइ कहे,

॥अथ थुइ (वसततिलका)॥

देविंदवंदियपयंपरुविंयाणि, नाणाणि केवलमणो ऽवि मई सुयाणि। पंचावि पंचम गई सियपंचमीए, पूयासमो गुणरयाण जियाण दिंतु ॥१॥ पछे खमा० दइने इच्छा० स० भ० पंचज्ञान आराधवा निमित्तकाउस्सग्ग करु इच्छं पंचज्ञान आराधवा निमित्त करेमि काउस्सग्ग वंदण० अन्नत्थ० कहीने पांच अथवा ५१ लोगस्सनो काउस्सग्ग करीने प्रगट लोगस्स कहे

पछे समारदावानी योधागादनामनी श्रीजी थुइ कहे प्रदक्षिणा होय तो प्रदक्षिणा खमासमणा पांच अथवा ५१ ज्ञान सयवि नमस्कार करे,

यथा पांच नमस्कार

१ श्रीमति	ज्ञानाय नम:
२ श्रीश्रुत	"
३ श्रीअवधि	"
४ श्रीमनपर्यव	"
५ श्रीलोकालोकप्रकाशककेवल	"

अथवा ५१ ज्ञानना नमस्कार

१ स्पर्शनेन्द्रियव्यंजनावग्रह	श्रीमतिज्ञानाय नमः
२ रसनेन्द्रियव्यंजनावग्रह	,,
३ घ्राणेन्द्रियव्यंजनावग्रह	,,
४ श्रोत्रेन्द्रियव्यंजनावग्रह	,,
५ स्पर्शनेन्द्रियअर्थावग्रह	,,
६ रसनेन्द्रियअर्थावग्रह	,,
७ घ्राणेन्द्रियअर्थावग्रह	,,
८ चक्षुरिंद्रियअर्थावग्रह	,,
९ श्रोत्रेन्द्रियअर्थावग्रह	,,
१० मनोअर्थावग्रह	,,
११ स्पर्शनेन्द्रियइहा	,,
१२ रसनेन्द्रियइहा	,,
१३ घ्राणेन्द्रियइहा	,,
१४ चक्षुरिंद्रियइहा	,,
१५ श्रोत्रेन्द्रियइहा	,,
१६ मनइहा	,,
१७ स्पर्शनेन्द्रियअपाय	,,
१८ रसनेन्द्रियअपाय	,,
१९ घ्राणेन्द्रियअपाय	,,
२० चक्षुरिंद्रियअपाय	,,

२१ श्रोत्रेंद्रियअपाय	श्रीमतिज्ञानाय नम
२२ मनअपाय	”
२३ स्पर्शनेंद्रियधारणा	”
२४ रसनेंद्रियधारणा	”
२५ घ्राणेंद्रियधारणा	”
२६ चक्षुरिंद्रियधारणा	”
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणा	”
२८ मनोधारणा	”
२९ अक्षर	श्रीश्रुतज्ञानाय नम
३० अनक्षर	”
३१ सज्ञी	”
३२ असज्ञी	”
३३ सम्यग्	”
३४ मिथ्या	”
३५ सादि	”
३६ अनादि	”
३७ सपर्यवसित	”
३८ अपर्यवसित	”
३९ गमिक	”
४० अगमिक	”
४१ अगप्रविष्ट	”

४२ अनग प्रविष्ट श्रीश्रुतज्ञानाय नम
४३ अनुगामि श्रीअवधिज्ञानाय नम
४४ अननुगामि श्रीअवधिज्ञानाय नमं
४५ वर्द्धमान श्रीअवधिज्ञानाय नम.
४६ हीयमान श्रीअवधिज्ञानाय नम
४७ प्रतिपाति श्रीअवधिज्ञानाय नम'
४८ अप्रतिपाति श्रीअवधिज्ञानाय नम'
४९ ऋजुमति श्रीमन'पर्यवज्ञानाय नम।
५० विपुलमति श्रीमन'पर्यवज्ञानाय नम.
५१ लोकालोकप्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नम

पछे (ॐ ह्रीं नमोनाणस्स) आ पदनी २० माला फेरवी, आठ थुइथी देव वादवा, अने स्थिरता होय तो ११ अगनी सज्झाय साभले पोषध लीधेलो होयतो बीजे दिवसे पोषध पालीने द्रव्यपूजा करे शीलव्रत वे टक पडिक्कमणु आदि श्रावकनी करणी करे उजमणा आदिनी बीजीविधि ज्ञानपचमीना मोटा स्तवनथी जाणवी.

अथ प्रथम आचारागनी सज्झाय

(ढाल हडीलानी)

हेलो अग सोहामणोरे लाल, अनुपम आचारागरे सुगणनणवर। वीर जिणदेभाखियोरे लाल, उववाइ

जास उपागे सुगु० ॥ १ ॥ बलिहारि ए अगनीरे लाल,
हु जाउ वारवाररे सु० । विनये ग्राचरी आदरेरे लाल
जिहासाधु भणो आचररे सु० ॥ २ ॥ सुयखंध दोय ने
जेहमारे लाल, प्रथर अध्ययन पचवीसरे सु० ॥ उद्दे
शादिक जाणीयेरे लाल, पिच्यासी सुजगीशरे सु० ।
ध० ॥३॥ हेतु जुगति करी शोभतारे लाल, पद अढारे
हजाररे सु० ॥ अक्षर पदने क्रेडेरे लाल, सख्याता
श्रीकाररे सु० ॥ ध० ॥४॥ गमा अनंता जेहमारे लाल,
वलि अनंत पर्यायरे सु० । त्रसपरिसतो छे इहरि लाल,
थावर अनंत कह्यारे सु० ॥ ध० ॥५॥ निबद्ध निका-
चित शाश्वतारे लाल, जिन प्रणीत ए भावरे सु० ।
सुणता आतम उल्लसेरे लाल, प्रगटे सहज स्वभावरे
सु० ध० ॥ ६ ॥ सुगुण श्रावक श्राविकारे लाल,
अगेधरीय उल्लासरे सु० । विधि पूर्वक तुमे साभलोरे
लाल, गीतारथ गुरुपासरे सु० ध० ॥७॥ ए सिद्धांत
महिमा निलोरे लाल, उतरे भवपाररे सु० । विनय-
चंद्र कहे माहरेरे लाल, एहीज अंग आधाररे सु० ।
ध० ॥ ८ ॥ इति.



॥ अथ बीजी सुयगडांगनी सज्झाय ॥

(ढाल रसीयानी) बीजोरे अंग तुमे सांभलो, मनोहर श्रीसुगडांग (मोरा साजन) त्रणमें त्रेसठ पाखंडी तणो, मत खंडयो धरि रंग मो० ॥१॥ मीठीरे लागे वाणी जिन तणी, जागे जेहथीरे ज्ञान मो० । ए वाणी मनभावी माहरे, मानु सुधारे समान मो० । मीठी० ॥२॥ राय पसेणी उपांग छे जेहनो, ए तो सूत्र गंभीर मो० । बहुश्रुत अरथ जाणे सहु, क्षीर-नीर धनुर तीर मो० । मी० ॥३॥ एहनारे सुयखंध दोय छे, वलि अध्ययन त्रेवीश मो० । उदेशा समुदेशा तिश भला, सज्झाये त्रेवीश मो० । मी० ॥४॥ नय निक्षेप प्रमाण भर्या, पद छत्तीस हजार मो० । संख्याता अक्षर पदमांहे, कुशलहे तेहनोरे पार मो० । मी०॥५॥ गमा अनंता पर्याय वली, भेद अनंत जिणमांहे मो०। गुण अनंत त्रस परित्त कह्या, थावर अनंत जेमांहि मो०। मी० ॥६॥ निबद्धनिकाचित जेसा सयकडा, जिनपन्न-त्तारे भाव मो० । भाखीरे सुदर एह प्ररूपणा चरण करणनोरे जाव मो० । ॥७॥ करीये भगत जुगति ए सूत्रनी, निश्चय लहीयेरे मुक्ति मो० । विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतम गुणनीरे शक्ति मो० मी० ॥८॥

॥ अथ त्रीजी ठाणांगनी सज्झाय ॥

(ढाल–आठ टके ककणो लीयोरी–ए चाल)

त्रीजो अंग भलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्री ठाणांग मोरो, मन मगन थयो, हरि देखी देखी भाव, हरि जीवा जीव स्वभाव, मोरो० । सयल जगत करी छाजतोरे जिनजी, जीवाभिगम उपांग मो०॥१॥ एह अंग मुझ मन वस्योरे जि० जिम कोकिल दल अंब मो०। गुहिर भायकर जागतोरे जि० आजतो एह आलय मो० ॥२॥ कूट शैल शिखरी शिखरे जि० कान नमे वलि कुट मो० । गहर आगर द्रह नदीरे जि० जेहमें अछेरे उदड मो० ॥३॥ दशठाणा अनि दीपनारे जि० गुण पर्याय प्रयोग मो० । परिरत जेहनी वाचनारे जि० सख्याता अनुयोगमो० ॥४॥ वेष्ट शिलोक निजुत्तसुरे जि० सगहणी पटिचित्तमो० । ए मद्द सख्याता जिहारे जि० सुणता उलसे चित्तमो० ॥ ५ ॥ सुयसध एक राजतोरे जि० दश अध्ययन उदारमो० उद्देशादिक वीशछेरे जि० पद् बहुत्तर हजारमो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशासन तणोरे जि० सुणे सिद्धांत वखाण मो० । विनयचंद्र कहे ते हुवेरे जि० परमारथना जाण मो० ॥७॥ इति

॥अथ चोथी समवायागनी सज्झाय॥

(ढाल–थारा महिला उपर मेह झबोके वीजली–ए चाल)

चोथी समवायाग सुणो श्रोता गुणी हो लाल, सुणो० । पन्नवणा उपाग करी शोभावणी हो लाल, करी० ॥ अरथ मागधी भाषा शास्त्र सुरतणी हो लाल, शास्त्र० । समकित भाव कुसुम परिमल व्यापी घणो हो लाल, परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवा जीव समासथी हो लाल, जीव० । लहीये एहथी भाव विरोध काइ नथी हो लाल, विण, भाग तीम स्व सम-यादिकना जाणीये हो लाल, यादि० । लोक अलोकने लोकालोक वखाणीये हो लाल, लोक० ॥ २ ॥ एक थकी छे सात समवाय प्ररूपणा हो लाल, सम० । कोडा कोड प्रमाणक जीव निरूपणा हो लाल, जी० । बारसविह गणिपिटक तणी सख्या कही हो लाल, त० । शाश्वता अरथ अनतक छे एहना सही हो लाल, छे० ॥३॥ सुयखध अध्ययन उद्देशादिके हो लाल, उ० । सख्याए एक एक प्रत्येके गुणनिला हो लाल, प्र० । पद एक लाख चोमालीस सहस तेउत्तरा हो लाल, स० । पदने अग्रउदय स्ख्याता अक्षरा हो लाल, सं० ॥४॥ भाष्यचूरणि निर्युक्ति करी सोहे सदा हो लाल, क० ।

सुणना भेद गभीर त्रिभन न होय कदा हो लाल, त्रि० । जेह नमावे अगकी अतरगति हसी हो लाल, अ० ।।जलवर्षते जोर कुण न हुवे खुमी हो लाल, कु० ॥५ जाण्यो परम सनेह जिणदसु माहरो हो लाल, जि० । तजिया शास्त्र मिथ्यात सत्र जाण्यो खरो हो लाल, सू० । जिम मालती लही भृग करीर नवि रहे हो लाल, क० । इश्वर शिरसुरगग तजी परिनचि रहे हो लाल, त० ॥ ६ ॥ ग प्रवचन निग्रथ तणो जुगते नडो हो लाल, जु० । शाकर सेलडी द्राख थकी पण मीठडो हो लाल, थकी० स्यु कहीये वहु वात विनयचद इम कहे हो लाल, वि० । गहना सुणीने भाव श्रोता अति गहगहे हो लाल, श्रो० ॥७॥ इति



॥ अथ (५) भगवतीसूत्रनी सज्झाय ॥

(ढाल–पथीडानी)

पचम अगें भगवती जाणीयेरे, जिहा जिनवरना वचन अथाघरे । हिमवत परवत सेती नीकल्यारे, मानु पर तक्ष गगा प्रवाहरे । पच० ॥१॥ सूरपन्नत्ती नामे परगडी रे, जेहनी छे उद्दाम उपागरे । सूर तणी रचना दरीयाजिमीरे, माहिला अरथ ने मजल

नगरे । प० ॥२॥ इहा तो सुयखंध एक अति भलोरे, एकसो एक अध्ययन उदाररे । दश हजार उद्देशा जेहनारे, जिहांकिण प्रश्न छत्रीस हजाररे । प० ॥३॥ पदतो दोय लाख अरथे भर्यारे, उपरि सहस अठयासी जाणरे, लोकालोक स्वरूपनी वर्णनारे, विवाह पन्नती अधिक प्रमाणरे । प० ॥४॥ करीये पूजा अने परभा वनारे, धरिये सद्गुरु उपर रागरे । सुणीये सूत्र भगवती रागसुरे, तो होय भवसागरनो तागरे । प० ॥५॥ गोतमनामे द्रव्य चढाइयेरे, सम्यग् ज्ञान उदय होय जेमरे । कीजे साधु तथा साहमी तणीरे भगति जुगति मनआणी प्रेमरे प० ॥६॥ इण विधि सु एह सूत्र आराधतांरे, इणभवसीझे वछित काजरे । परभव विनयचंद कहे ते लहेरे, मोहन मुगतिपुरीनो राजरे । प० ॥७॥ इति

॥ अथ (६) ज्ञातासूत्रनी सज्झाय ॥

(ढाल–सितरुख लागा राजाजीरे मालिये–ए देशी)

छट्ठा अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणीयेजी, जेहना रे अरथ अधिक उद्दारे, सारा सुणजो धरिनेह सिद्धातनी वातडीजी । श्रवणे सुणता गाढो रस उपजेजी,

मधुरता तर्जित जिम मधुस्वह हो, म्हारा० ॥ १ ॥ जम्बूद्वीपपन्नत्ती उपाग जेहनोजी, इणमाहे जिन पूजानी विधिजो रहो । म्हा० । अर्चिक सुणि परम शातिरस अनुभवेजी, चर्चिक सुणिकरे ममसोर हो । म्हा० ॥२॥ नगर उद्यान चैत्यवन गदमोरामणोजी, समवसरण राजाना मानने तातहो, म्हा० । धर्माचारज धर्म कथा तिहा दाखवीजी, इह लोकपरलोक ऋद्धि विशेष सुहातहो, म्हा० ॥३॥ भोग परि त्याग प्रवज्या पर्यंयाजी, सूत्रपरिग्रह धार तपउपधान हो । म्हा० । सलेखण पच्चख्खाण पादपोपगमनतजी, स्वर्गगमन शुभकुल उतपत्ति हो । म्हा० ॥ ४ ॥ योधि लाभ यलितन ते अतक्रिया कहीजी, धर्म कथाना दोय छे सुयखधहो । म्हा० । पहिलाना उगणीश अध्ययन ते आजडे जी, बीजाना दशवर्ग मला अनुयधहो म्हा० ॥ ५ ॥ उंठकोडी तिहा सयर कथानक भापियाजी, भाख्यायलि उगणीश उद्देश हो म्हा० । सख्यता हजार भला पद पहनाजी, गहथकी जाये कुमति कलेश हो म्हा० ॥६॥ विनय करे जे गुरुनो यहु परेजी, तेहने श्रुत सुणता यहु फल होय हो । म्हा० ते रसिया मनवसि या विनयचदनेजी, सोमाहेमिले जोया एकके दोयहो म्हा० ॥७॥ इति

॥अथ (७) उपाशकदशासूत्रनी सज्झाय॥

(ढाल–विछियानी)

हवे सातमो अंग ते साभलो उपाशकदशा नामे चगरे । श्रमणोपाशकनो वर्णना, जसुचइपन्नत्ती उपा गरे ॥ १ ॥ मनलागो मोरोसुत्रथी, एतो भववेराग तरगरे । रसराना ज्ञाता गुण लहे, परमारथ सुविहित सगरे । मन० ॥ २ ॥ इण अगे सुयखंध एक छे, अध्ययन उद्देश विचाररे । दशदश सख्याये दाखव्या, पदपिण सख्यात हजाररे । म० ॥ ३ ॥ आणदादिक श्रावक तणो, सुणता अधिकार रसालरे । रस लागे जागे मोहनी, श्रोता जननें तत्कालरे । म० ॥ ४ ॥ श्रोता आगलतो वाचतां, गीतारथ पामे रीझरे । जे अर्द्धदग्ध समझे नही तेहसु तो करवी धीजरे । म० ॥५॥ दश श्रावकतो इहा भाखिया, पण सूत्र भण्यो नही कोयरे । ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अरथनी धारणा होयरे । म० ॥६॥ साचो होय ते प्ररुपीये, निस्संक पणे सुजगीशरे । कविविनयचद कहे स्युथयो, जो कुमति करस्ये रीशरे म० ॥७॥ इति०



अथ ८ अंतगडदशागनी सज्झाय

(ढाल वीरवखाणी राणी चेलणाजी ए देशी)

आठमो अनगडदशागजी, सुणी करो कान पवित्र। अतगड केवली जे थयाजी, तेहनारे इण आठ चरित्र ॥१॥ कर्म कठिन दल चूरताजी पूरता जगनी आस। जिनवर देव इण भाखताजी, शाश्वतता अरथ सुविलास ॥ आठ० ॥ २ ॥ सफल निक्षेप नय भगवीजी, अगना भाव अभग। महज सुन्दरगनी तलिपकाजी, कलिपका जासु उपांग ॥ आठ० ॥३॥ एक सुयखध इण अगनोजी, वर्ग छे आठ अभिराम। आठ उदेशा छे वलिजी, सख्याता सहस पदठाम ॥ आठ० ॥ ४ ॥ आठमा अगना पाठमेंजी, एहनो अच्छेरे मीठास। सरस अनुभव रस उपजेजी, सपजे पुन्यनी रास ॥ आठ० ॥ ५ ॥ विषयलपट नर जे हुवेजी, निरविषयी सुण्या थाय। जिम महाविष विषधर तणोजी नागमत्रे सुण्या जाय ॥ आठ ॥६॥ अमृत वचन सुख वरसतीजी, सरस्वती करोरे पसाय ॥ जिम विनयचद्र इण सूत्रनाजी, तुरत लहे अभिप्राय ॥ आठ० ॥७॥ इति



॥ अथ (९) अनुत्तरोववाइ अंग सज्झाय ॥

(चाल-नायक विरली ले-ए देशी)

नवमो अंग अनुत्तरोववाई, तहनी रचना सुहावे हो। (श्रावक सूत्र सुणो) सूत्र सुणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणीहो ॥ श्रा० ॥१॥ जसु कल्पनामें तिहना नामे, सोहे उपांग प्रमाणे हो ॥ श्रा० ॥ एतो आगमने अनुकूला, मानुं मेरु जिनवरनी चूलाहो ।श्रा०। ॥२॥ एतो सूत्रनो नाम सुणी जे, तिमतिम अंतर नाठि भीजेहो ।श्रा०। प्रगटे मंगल मालहा, एहथी उलसे गोरी देह हो ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ अनुत्तर सुरपद पामा, तेहना सुख इणमेंगाया हो ।श्रा०। समकितादिक भाव वखाण्या, ते तो छठे अंगे आण्याहो ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ इहां तणा सुय खंध वारु, त्रण वर्ग वलि मनोहारा हो ।श्रा०। उद्देशा त्रण सत्तरा, संख्याता सहस पद पूरा ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ सूत्र सुणावुं अमे नहो, ज्ञानी अक्षर लखे जेहने हो । श्रा० । श्रोताथी प्रीत लगावुं, तिणकने गुरु न लगावुंहो ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ जे सुणतां करे चकोर, तेनो आगम नहीं पण चोर हो । श्रा० । कवि चिदानंद कहे साचो श्रुत रंगे सहु कोई राचोहो ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ इति



॥ अथ (१०) प्रश्न व्याकरणांग सज्झाय ॥

(ढाल–आघा आम पधारो पूज्य–ए देशी)

दशमो अंग सुरंग सुहावे, प्रश्न व्याकरण नामे। सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चिदानंद फल पामे। आवो आवो गुणना जाण, तुमने सूत्र सुणावु ॥ १ ॥ पुष्प कली ज्यु परिमल महके, गुरु परागने रागे। तिम उपांग पुष्फिका लहनो, जोर जुगति करी जागे ॥ आवो० ॥२॥ अंगुष्ठादिक जिहा प्रकास्या, प्रश्नादिक अति रूडा। ते छे अष्टोत्तर मत न तो, सूत्र मध्य मणि चूडा ॥ आ० ॥३॥ आश्रवद्वार पाच ईहा आण्या, पाचे संवर द्वारा। महामन्त्र वाणीमा लहीये, लब्धि भेद सुखकारा ॥आ० ॥४॥ सुयखंध एक छे दशमें अंगे, पण यालीस अज्झयणा। पण यालीस उद्देश वली पद, सहस संख्यात नीरयणा ॥ आ० ॥ ५ ॥ जे नर सूत्र सुणे नही काने, केवल पोषे काया। माया माहि रहे लपटाणा, ते नर ईम हीज आया ॥ आ० ॥ ६ ॥ सूत्रमाहि तो मारग दोय छे निश्चय नय व्यवहारा। विनयचंद कहेते आद-रिये, तजि मन मदन विकारा ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति



॥ अथ (११) विपाकसूत्रनी सज्झाय ॥

(ढाल–पदमवानी)

सुणोरे विपाक श्रुत अंग इग्यारमो, तजो विकथा वृथा जे अनेरी । ललित उपांग जसु मुगर पुप्फचूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सुणो० ॥ १ ॥ अशुभ किंपाक सम दुष्कृत फल भोगवी, नरकमां नरक थया जेह प्राणी । सुकृत फल भोगवी स्वर्गमां जे गया, ताम वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु० ॥ २ ॥ दोय श्रुत स्कंधने वीश अध्ययन वली, वीश उदेशा इहां जिन प्रयुंजे । सहस संख्यात पद कुंद मच कुंद जिम, बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजे ॥ सु० ॥ ३ ॥ सरस स्तवक लता सुरभि सहुने रुचे, अन्य उपगारनी बुद्धिमांहे । सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणीये, जेहथी पुरुष सुख अचल चाहे ॥ सु० ॥ ४ ॥ बन्धने मोक्षना बेउ कारण अछे, दुष्कृतने सुकृत जोवो विचारी । दुष्कृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिन वचन धारिये गुण संभारी ॥ सु० ॥५॥ मकररे मकर निंदा निगुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ चाहे । नारकी प्रकृति तजि सहज संतोष भज, लाग श्रुत सांभली धरम धन्धे ॥ सु० ॥ ६ ॥ सुखने दुख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें

वीतरागे । चिर जयो वीर शासन जिश सूत्रथी, कवि विनयचद गुण ज्योति जागे ॥ सु० ॥ ७ ॥



(कलश)

(ढाल–वधावानी)

अग इग्यारह में सुण्या, साहेलीय । आज थया रगरोलकि, सानदी सूत्रमाहि गहनो ॥ सा० ॥ भाख्यो सर्व निचोल ॥ सा० ॥ १ ॥ सहेलीय आज वधामणी, पसरी अग इग्यारनी । सा० । मुझ मन मडप वेलकि, सा० ॥ सींचु ते हरखे करी, सा०॥ अनुभव रसनी रेल की, सा० ॥२॥ हेज धरी जे साभले, सा० ॥ कुण घुढा कुण बालकि, सा० ॥ तोते फल लहे फूटरा, सा० ॥ स्वादे अतिहि रसालकि, सा० ॥ ३ ॥ हरख अपार धरी हीये, सा० ॥ अहम्मदावाद मझारकि, सा० ॥ भास करीय अगनी, सा० ॥ वरत्या जयजयकारकि, सा०॥४॥ सवत सतर पचावने, सा० ॥ वरसा ऋतु नभ मासकि, सा०॥ दशमी दिन शुदि पक्षमा, सा० ॥ पूरण थई मन आशकि, सा०॥ ५ ॥ श्रीजिनधर्मसूरि पाटवी, सा०॥ श्रीजिनचद्र सूरी शकि, सा० ॥ खरतर गच्छना राजिया, स० ॥ तसुराजे सुजगीशकि, सा० ॥ ६ ॥ पाठक हरख निधानजी, सा० ॥ ज्ञान तिलक सुपसायकि,

स० ॥ विनयचन्द्र कहे मे करी. सा० ॥ अंग इग्यार सज्झायकि, साहे० ॥७॥

॥ इति ज्ञानपंचमी आराधन विधि संपूर्णम् ॥

॥ अथ मौनएकादशी पर्व अधिकार ॥

मगशिर सुदि ११ इग्यारस मौन एकादशी नामथी पर्व प्रसिद्ध छे, आ दिवसे १५० दोढसो जिन कल्याणक थया छे, यथा श्रीमल्लिनाथना जन्म १ दीक्षा २ केवलज्ञान ३ आ त्रण कल्याणक श्रीअरनाथनी दीक्षा १ कल्याणक अने श्रीनमिनाथनो केवल ज्ञान १ कल्याणक थयो छे, तेथी आ वर्त्तमान चोवीशीमा पाच कल्याणक थया एजी रीते बीजा चार भरत अने पाच ऐरवतने विषे पाच पाच कल्याणक होवाथी दश क्षेत्र सम्बंधि १० वर्त्तमान जिन चोवीसीमा ५० पचास कल्याणक थया वली अतीत वर्त्तमान अने अनागत ३० जिन चोविशीमा १५० दोढसो कल्याण थाय छे, ते कारणथी आ दिवस पर्व तरीके मोटो गणाय छे, वली आ दिवसे मौन सहित उपवास करवो, शक्ति होय तो पोषध करवो तेनी पण शक्ति न होय तो देशावगाशिक के सामायिक अवश्य करवो, अने पोषध आदि व्रतमा मौनपणे १५० मालानो गुणणो करे, आ तप जघन्यथी

११ मास मध्यमथी ११ वर्ष अने ११ मास उत्कृष्टथी जाव जीव सुधी उपवास आदिथी सुदि एकादशी आराधे कदाच रोगादि कारणे वडमा कर तो व्रत भग न थाय, आ पण न बनी शके तो मागशिर सुदि मौन एकादशीने दिवसे उपवासादिकथी आ पर्वनी आराधना करे, तथा ११ खमासमणा ११ साथीया ११ लोगस्सनो काउस्सग [श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नम) आ पदनी २० माला आ बाना दरेक शुदि ११ ने दिवसे करवा बीजी प्रतिक्रमण आदिक्रिया नित्य कृत्यनि माफक समजवी आ व्रत पूर्ण थये छते ज्ञानपचमनी माफक उजमणो समजवो, पण एटलु विशेष जे के पाच पाच वस्तुने ठेकाणे इग्यार इग्यार वस्तु समजवी

अथ मौनएकादशीनो १५० गुणणा

[१] जबूद्वीप भरतक्षेत्रे अतीत जिन चोवीशी पाच कल्याणक नाम

४ श्री महायश	सर्वज्ञाय नम
६ श्रीसर्वानुभूति	अर्हते नम
६ श्रीसर्वानुभूति	नाथाय नम
६ श्रीसर्वानुभूति	सर्वज्ञाय नम
७ श्रीधर	नाथाय नम

[२] जम्बूद्वीप भरतक्षेत्रे वर्त्तमान जिन
चोवीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीअर	नाथाय नमः
१९ श्रीमल्लि	अर्हते नमः
१९ श्रीमल्लि	नाथाय नमः
१९ श्रीमल्लि	सर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीनमि	सर्वज्ञाय नमः

[३] जम्बूद्वीप भरतक्षेत्रे अनागत जिन
चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीस्वयंप्रभ	सर्वज्ञाय नमः
६ श्रीदेवश्रुत	अर्हते नमः
६ श्रीदेवश्रुत	नाथाय नमः
६ श्रीदेवश्रुत	सर्वज्ञाय नमः
७ श्रीउदय	नाथाय नमः

[४] धातकी खंड पूर्व भरते अतीत जिन
चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीअकलंक	सर्वज्ञाय नमः
६ श्रीशुभंकर	अर्हते नमः
६ श्रीशुभंकर	नाथाय नमः
६ श्रीशुभंकर	सर्वज्ञाय नमः
७ सप्त.	नाथाय नमः

(५) घातकीखडे पूर्वभरते वर्त्तमान जिन
चोवीसी पाचकल्याणक

१८ श्रीगागीलनाथाय नम
१९ श्रीगुणनाथअर्हते नम
१९ श्रीगुणनाथनाथाय नम
१० श्रीगुणनाथसर्वज्ञाय नम
२१ श्रीब्रह्मेंद्रसर्वज्ञाय नम

(६) घातकी खडे पूर्वभरते अनागत जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीसमतिसर्वज्ञाय नम
६ श्रीमुनिनाथअर्हते नम
६ श्रीमुनिनाथनाथाय नम
६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञाय नम
७ श्रीविशिष्टनाथाय नम

(७) घातकीखडे पश्चिमभरते अतीत जिन
चोवसी पाच कल्याणक

४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञाय नम
६ श्रीहरिभद्रअर्हते नम
६ श्रीहरिभद्रनाथाय नम
६ श्रीहरिभद्रसर्वज्ञाय नम
७ श्रीमगधाधिनाथाय नम.

(८) धातकीखंडे पश्चिमभरते वर्तमान जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

१८ श्रीमल्लिसिंह नाथाय नमः
१० श्रीअक्षोभअर्हते नमः
१९ श्रीअक्षोभनाथाय नमः
१० श्रीअक्षोभसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीप्रयच्छसर्वज्ञाय नमः

(९) धातकीखंडे पश्चिमभरते अनागत जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

२ श्रीआदिकरसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीधनदअर्हते नमः
६ श्रीधनदनाथाय नमः
६ श्रीधनदसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीपोषनाथाय नमः

(१०) पुष्करार्द्ध पूर्वभरते अतीतजिन
चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीमृदुनाथाय नमः
६ श्रीव्यक्तअर्हते नमः
२ श्रीव्यक्तनाथाय नमः
६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञाय नमः
७ कलाशतसर्वज्ञाय नमः

(११) पुष्करार्द्ध पूर्वभरते वर्त्तमानजिन
चोवीसी पाच कल्याणक

१८ अयश्रीयोगनाथाय नमः
१९ श्रीयोगनाथअर्हते नम
१९ श्रीयोगनाथनाथाय नमः
१९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञाय नम
२१श्रीअरण्यवाससर्वज्ञाय नम

(१२) पुष्करार्द्ध पूर्वभरते अनागत जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीपरमसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हते नमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथाय नमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीनिष्केशनाथाय नमः

(१३) पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते अतीत जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीप्रलयसर्वज्ञाय नम
६ श्रीचारित्रनिधिअर्हते नम
६ [illegible]चारित्रनिधिनाथाय नम
६ श्री[illegible]रित्रनिधिसर्वज्ञाय नम
७ [illegible]जिननाथाय नम

(१४) पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते वर्त्तमान जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

१८ श्रीप्रसादनाथाय नम
१९ श्रीविपरितअर्हते नम.
१० श्रीविपरितनाथाय नम
१० श्रीविपरितसर्वज्ञाय नम
२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञाय नम

[१५] पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते अनागत जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीअघटितसर्वज्ञाय नम
६ श्रीभ्रमणेंद्रअर्हते नम
६ श्रीभ्रमणेंद्रनाथाय नम
६ श्रीभ्रमणेंद्रसर्वज्ञाय नम
७ श्रीऋषभचंद्रनाथाय नम.

[१६] जम्बूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अतीतजिन
चोवीशी पाच कल्याणक

४ ॰न्यानसर्वज्ञाय नम
६ ॰अभिनदनअर्हते नम
६ अभिनदननाथाय नम.
६ अभिनदनसर्वज्ञाय नम
७ ॰न्नेऽगनाथाय नम

(१७) जम्बूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे वर्तमान जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

१८ श्रीअतिपार्श्वनाथाय नम
१९ श्रीमरुदेवअर्हते नम
१९ श्रीमरुदेवनाथाय नम
१० श्रीमरुदेवसर्वज्ञाय नम
२१ श्रीश्यामकाष्टसर्वज्ञाय नम

(१८) जम्बूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अनागत जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञाय नम
६ श्रीव्रतधरअर्हते नम
६ श्रीव्रतधरनाथाय नम
६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञाय नम
७ श्रीनिर्वाणनाथाय नम

(१९) धातकीखंडे पूर्वऐरवते अतीत जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीसौंदर्यसर्वज्ञाय नम
६ श्रीत्रिविक्रमअर्हते नम
६ श्रीत्रिविक्रमनाथाय नम
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञाय नम
७ श्रीनरसिंहनाथाय नम

(२०) धातकीखंडे पूर्वऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

१८ श्रीकामनाथाय नमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हते नमः
१९ श्रीसंतोषितनाथाय नमः
१० श्रीसंतोषितसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञाय नमः

(२१) धातकीखंडे पूर्वऐरवतक्षेत्रे अनागत जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

२ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीचन्द्रदाहअर्हते नमः
६ श्रीचन्द्रदाहनाथाय नमः
६ श्रीचन्द्रदाहसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीदिलादित्यनाथाय नमः

(२२) धातकीखंडे पश्चिमऐरवतक्षेत्रे अतीतजिन
चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीपुरूपसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीअवबोधअर्हते नमः
६ श्रीअवबोधनाथाय नमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीविक्रमेंद्रनाथाय नमः

(२३) धातकी पश्चिम ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमानजिन
चोवीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीनंदकेशनाथाय नमः
१९ श्रीहरअर्हते नमः
१० श्रीहरनाथाय नमः
१९ श्रीहरसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीसुध्यानसर्वज्ञाय नमः

(२४) धातकी पश्चिम ऐरवतक्षेत्रे अतीतजिन
चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीअसोचितअर्हते नमः
६ श्रीअसोचितनाथाय नमः
६ श्रीअसोचितसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीधर्मेन्द्रनाथाय नमः

(२५) पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतक्षेत्रे अतीतजिन
चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीअश्वाहिकसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीवणिकअर्हते नमः
६ श्रीवणिकनाथाय नमः
६ श्रीवणिकसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीउदयज्ञाननाथाय नमः

(२६) पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

१८ श्रीऐमतनाथाय नम
१० श्रीमायकाक्षअर्हते नम॰
१९ श्रीमायकाक्षनाथाय नम
१० श्रीमायकाक्षसर्वज्ञाय नम
२१ श्रीतमोकदनसर्वज्ञाय नम॰

[२७] पुष्करार्द्ध पूर्वऐरवतक्षेत्रे अनागतजिन
चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञाय नम॰
६ श्रीरविराजअर्हते नम
६ श्रीरविराजनाथाय नम
= श्रीरविराजसर्वज्ञाय नम
७ श्रीप्रथमनाथाय नम

[२८] पुष्करार्द्ध पश्चिम एरवतक्षेत्रे अतीतजिन
चोवीशी पाच कल्याणक

४ श्रीअश्ववृदसर्वज्ञाय नम
६ श्रीकुटिलअर्हते नम
६ श्रीकुटिलनाथाय नम
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञाय नम
७ श्रीवर्द्धमाननाथाय नम

[२९] पुष्करार्द्ध पश्चिम ऐरवतक्षेत्रे वर्तमानजिन चोवीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीविवेकनाथाय नम
१९ श्रीधर्मचद्रअर्हते नम
१९ श्रीधर्मचन्द्रनाथाय नम
१९ श्रीधर्मचद्रसर्वज्ञाय नम
२१ श्रीनंदिकसर्वज्ञाय नम.

[३०] पुष्करार्द्ध पश्चिम ऐरवतक्षेत्रे अनागत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीकलापसर्वज्ञाय नम
६ श्रीविसोमअर्हते नम.
६ श्रीविसोमनाथाय नम
६ श्रीविसोमसर्वज्ञाय नम
७ श्रीआरणनाथाय नम

इति मौनएकादशी १५० गुणणो



पोषवदि १० दशमी तपनु अधिकार

आ तप पोषवदि एटले गुजराती मागशरवदि १० ने दिवसे थाय छे, केमके ते दिवसे श्रीपार्श्वनाथनु जन्मकल्याणक छे, तेमा प्रथम नवमीने दिवसे साकरना पाणीनु ठाम चोविहार एकासणु करवु, इग्यारसने दिवसे पडिक्कमणो देवपूजा करवी, ब्रह्मचर्य पालवु, शक्ति होयतो पोषो करवो, आतप दश वरष दश मास सुधी दरेक दशमने दिवसे एकाशणु करवु आ तप करनार मृगदत्तानी माफक आ लोक परलोकनेविषे सुखी थाय छे, अनुक्रमे मोक्षना सुख पामे, दशमीने दिवसे [श्रीपार्श्वनाथ अर्हते नमः] आपदनी २० वीश माला फेरवी अरिहतना बार गुण होवाथी १२ साथीया १२ खमासणा १२ प्रदक्षिणा १२ लोगस्सनो काउस्सग करवो, उजमणामा ज्ञानदर्शन चारित्रनी दश दश वस्तु समजवी



– अथ मेरु तेरसतपनो अधिकार –

आ तपनो माघवदि गुजराती पोषवदि १३ तेरसने दिवसे आरभ थाय छे, ते दिवसे श्रीऋषभदेवनुं निर्वाण कल्याणक थयु छे तेथी ए दिवसनु महात्म्य घणु मोटु छे, ते दिवसे चउविहार उपवास करवो, शक्ति न होय

तो तिविहार करवो, रत्नना सोनाना चादीना अथवा घीना पाच मेरु करवा, ते मेरु चारे दिशामा चार अने तेना वीचमां एक मोटो मेरु करवो, जो गाममा वाजा गाजा सहित फेराबु शोयतो, ते मेरुने थालमा राखीने फेरवीने देरासरमा जइने चारे दिशामा तथा एक वीचमा नदावर्त्त साथीया (गुहली) पाच करीने तेना उपर मुकीने दीप धूप प्रमुखथी पुजा करवी, आ तप तेर मास अथवा तेर वरस सुधी करबु, ते दिवसे [श्रीऋषभदेव पारगताय नम] आ पदनी २० वीसमाला गणवी साथीया खमासणा प्रदक्षिणा काउस्सग्ग वार वार करवा



अथ रोहिणी तप अधिकार

आ तप रोहिणी नक्षत्रमा थाय छे, तेथी ते रोहिणी तप कहेवाय छे, ते तप अक्षय तृतीया अथवा आगल पाछल रोहिणी नक्षत्र आवे त्यारे सरु थाय छे, ते तप श्रीवासुपूज्यस्वामीनी पुजापूर्वक सात वरस सात मास सुधी थाय छे, जे जे मासमा ज्यारे रोहिणी आवे, त्यारे उपवास आंबील अथवा एकाशणाथी ते तप करवो, कदाच भूल थइ जाय तो पाछो फरीथी करवो, देवपूजा प्रतिक्रमण देववदन शीलव्रत आदि क्रिया करवी,

उजमणामा रूप्य सुवर्णमय अशोकवृक्ष आदि करवो, आ तपथी अक्षयसुख मीले छे [श्रीवासुपूज्यसर्वज्ञाय नमः] आ पदनी वीशमाला फेरववी साथीया खमासणा काउस्सग्ग प्रदक्षिणा बार बार जाणवा,

॥ अथ सोलीया (कषाय जय) तपनी विधि ॥

क्रोध१ मान२ माया३ लोभ ४ आचार कषायना सोल भेद थाय छे यथा अनतानुबधी ४ अप्रत्याख्यानी ४ प्रत्याख्यानी४ सज्वल४ आ कषायने जीतवाने चारओली करवी, यथा पहेले दिवसे एकासणु बीजे दिवसे नीवी त्रीजे दिवसे आंबील चोथे दिवसे उपवास करवाथी एक ओली पुरी थाय छे एवी रीते चार ओली करवाथी १६ दिवसे आ तप पुरो थाय छे, आ तप पूर्ण थया बाद ज्ञानपूजा पूर्वक १६ मोदक फलफुल आदि अष्टद्रव्यथी जिनेश्वरनी पूजा करवी, [सर्वकषाय जय तपसे नमः] ए पदनी दररोज २० वीशमाला गणवी, अने साथीया विगेरे सोल सोल करवा, प्रतिक्रमण देववदन आदि क्रिया हमेसानी माफक समजवी,

॥ अथ पखवासो तपविधि ॥

प्रथम शुभदिने गुरू पासे तप ग्रहण करे, पछे सुदि एकमथी लगावीपूनम सुधी १५ उपवास भेगा करे पनर

उपवासनी शक्ति न होय तो प्रथम सुदि पक्षनी एकमे उपवास करवो, पछे बीजे मासे सुदि बीज त्रीजे मासे सुदि त्रीज एम अनुक्रमे पनरमे मासे पूनमनो उपवास करवो, त्यारे आ तप पूरो थाय छे, जे दिवसे उपवास होय ते दिवसे (श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञाय नम) आ पदनी २० माला गणवी, साथीया आदि बार बार समजवा, प्रतिक्रमण देववंदनादि क्रिया सर्वे करवी



॥ अथ छमासी तपविधि ॥

श्रीमहावीरस्वामीना शासनमा उत्कृष्ट छमासी (उपवास १८०नो) तप थाय छे तेथी तेने आश्रीने एकसो एसी उपवास एकातरीया पारणावाला करवा उजमणामा १८० लाडु फल विगेरे प्रभुने आगल राखवा, तपस्याने दिवसे (श्रीमहावीरनाथाय नम.) आ पदनी वीश माला साथीया विगेरे बार बार करवा, अथवा एकातरीया उपवास छमास सुधी करवा, तेमां चउदशे खवाय नही, चोमासीनो छठ्ठ करवो, शरु करता छठ तेमज पारणु पण छठे थाय छे, आ छमासी तपमा ९० उपवास थाय छे,देववंदनादि क्रिया करवी,एवीरीते आठमासी तप करवो होयतो आठमास करवा

॥ अथ वरषीतप विधि ॥

श्रीरुषभदेवस्वामीए चैत्र (गुजराती फागण) वदि ८मे दीक्षा लइने बीजा वरषनी अक्षात्रीजे (बारसो उपवासे) पारणो कर्यो तेथी आने वरषीतप कहे छे, आ तप चैत्रवदी आठमथी सरु करता त्रीजे वर्षे अक्षात्रीजनो पूर्ण थाय छे, आ तपमा एकान्तरीया उपवास करवा, तप करता वचली अक्षात्रीजमा पारणो आवे तो ते दिवसे उपवास करवो, पण पारणो न करवो, छेल्ले दिवसे देवगुरुनी पुजा पूर्वक स्वामीवत्सल करीने पारणो करवो, तपस्याने दिवसे (श्रीरुषभदेवनाथाय नमः) आ पदनी वीश माला फेरवी, साथीया विगेरे बार बार समजवा,

(बीजीरीत) श्री रुषभदेव स्वामीना शासनमा उत्कृष्ट तपस्या बार मासनी होवाथी अक्षात्रीजे एकान्तरीया उपवास सरु करीने बीजे वरषे अक्षात्रीजनो पारणो करे बाकी विधि उपर प्रमाणे—

हालमा आ तप करवानो प्रचार आ प्रमाणे छे चैत्रवद ८ने दिवसे उपवासथी सरु करी एकांतरे पारणे बेयासणु करी तेर मास अने अगीयार दिवसे एच्छे अक्षात्रीजे पारणु करे छे, पारणे १०८ घडा सेलडीनो रस अथवा साकरनो पाणी पीए छे, [घडो रूपानो

घणो नानो पनावे छे]

आ तपमां चउदशनो पारणो न करवो जोइए तेम श्रण चोमासी (१४-१५) ना छठ करवा जोइए, अने छेवटे छठथी ओछे तपें पारणु न करवु जोइए, सेलडीनो रस बे पशेर पछे अभक्ष थाय छे तेथी ताजो वापरवो, उपवासने दिवसे देववंदनादि क्रिया करवी

॥ अथ २८ लब्धी तपविधि ॥

आ तप एक एक लब्धिनो एक एक एकांतरीया उपवास करवाथी अठ्ठावीस उपवासे पूरो थाय छे, अने जे लब्धिनो उपवास चालतो होय, ते लब्धिनी २० माला फेरवी, अने देववंदनादि क्रिया करवी आ तपस्या करवाथी आणंद थाय छे

॥ २८ लब्धिनो गुणणो ॥

१ श्रीआमोसही	लब्धये नमः
२ श्रीवीपोसही	”
३ श्रीखेलोसही	”
४ श्रीजल्लोसही	”
५ श्रीसव्वोसही	”
६ श्रीसंभिन्नसोयोसही	”

७ श्रीअवधि	लब्धये नम
८ श्रीऋजुमइ	,,
९ श्रीविपुलमइ	,,
१० श्रीचारण	,,
११ श्रीआसीविस	,,
१२ श्रीकेवल	,,
१३ श्रीगणधर	,,
१४ श्रीपूर्वधर	,,
१५ श्रीअरिहंत	,,
१६ श्रीचक्रवर्ति	,,
१७ श्रीबलदेव	,,
१८ श्रीवासुदेव	,,
१९ श्रीअमृताश्रव	,,
२० श्रीकुठबुद्धि	,,
२१ श्रीपदानुसारि	,,
२२ श्रीबीयबुद्धि	,,
२३ श्रीतेजोलेश्या	,,
२४ श्रीआहारक	,,
२५ श्रीशीतलेश्या	,,
२६ श्रीवैक्रिय	,,
२७ श्रीअक्षीणमानसी	,,

२८ श्रीपुलाकन   ल्ब्धये नम इति

॥ अथ १४ पूर्व तपविधि ॥

आ चउद पूर्वनी तपस्या एकांतरीया चउद १४ उपवास पूरा करवाथी थाय छे, जे दिवसे जे पूर्व नुउपवास होय, ते दिवसे ते पूर्वनी २० माला गणे, आ तप सुदि १४थी सरु करवो, अने साथीया विगेरे कोष्टमा देखया देववदनादि सर्व क्रिया करवी तप पूर्ण थया उजमणो ज्ञान पचमी मरखो जाणवो

अथ १४ पूर्वनो गुणणो आदि

		सा. ख. लो. माला
१ श्रीउत्पाद	पूर्वाय नम	१४-१४-१४-२०
२ श्रीअग्रायणी	,,	२६-२६-२६-२०
३ श्रीवीर्यप्रवाद	,,	१६-१६-१६-२०
४ अस्तिप्रवाद	,,	२८-२८-२८-२०
५ श्रीज्ञानप्रवाद	,,	१२-१२-१२-२०
६ श्रीसत्यप्रवाद	,,	२—२—२-२०
७ श्रीआत्मप्रवाद	,,	१६-१६-१६-२०
८ श्रीकर्मप्रवाद	,,	३०-३०-३०-२०
९ श्रीप्रत्याख्यानप्रवाद	,,	२०-२०-२०-२०
१० श्रीविद्याप्रवाद	,,	१६-[illegible]-२०
११ श्रीकल्याणकप्रवाद	,,	१[illegible]

१२ श्रीप्राणावाय	पूर्वाय नमः	१३-१३-१३-२०
१३ श्रीक्रियाविशाल	,,	३०-३०-३०-२०
१४ श्रीलोकबिंदुसार	,,	२५-२५-२५-२०



अथ तिलक तपविधि

आ तप त्रीश उपवासे पुरो थाय छे तेमा श्रीरुषभदेवस्वामी सम्बन्धी ६ छ उपवास करे, पछे अजित नाथ आदि बावीस तीर्थकरो संबन्धी एक एक उपवास करे अने महावीरस्वामी सम्बन्धी बे उपवास करे गुणणो जे तीर्थङ्कर सम्बन्धी उपवास होय, तेनो गुणणो करे, साथीया विगेरे बारबार, देववदनादि सर्व क्रिया करे,

—० गुणणो ०—

१ श्रीरुषभदेव	सर्वज्ञाय नमः
२ श्रीअजितनाथ	,,
३ श्रीसंभवनाथ	,,
४ श्रीअभिनंदन	,,
५ श्रीसुमतिनाथ	,,
६ श्रीपद्मप्रभु	,,
७ श्रीसुपार्श्वनाथ	,,
८ श्रीचंद्रप्रभु	

९ श्रीसुविधिनाथ	सर्वज्ञाय नमः
१० श्रीशीतलनाथ	”
११ श्रीश्रेयांसनाथ	”
१२ श्रीवासुपूज्यस्वामी	”
१३ श्रीविमलनाथ	”
१४ श्रीअनंतनाथ	”
१५ श्रीधर्मनाथ	”
१६ श्रीशान्तिनाथ	”
१७ श्रीकुंथुनाथ	”
१८ श्रीअरनाथ	”
१९ श्रीमल्लिनाथ	”
२० श्रीमुनिसुव्रत	”
२१ श्रीनमिनाथ	”
२२ श्रीनेमिनाथ	”
२३ श्रीपार्श्वनाथ	”
२४ श्रीमहावीर	”



॥ अथ ४५ आगम तपविधि ॥

आ तप ४५ उपवास करवाथी पूरो थाय छे, आ तपना उपवास एकांतरीया अथवा ज्ञानादि तिथीमा छुटा छुटा पण थाय छे, जे सूत्र चालतो होय ते सूत्रनी

वीश माला गणजी.साथीया विगेरे कोष्टक प्रमाणे जाणवा

प्रथम ११ अग गुणणो

	मा ग लो माला
१ श्रीआचारागसूत्राय नम	२५-२५-२५-२०
२ श्रीसुगडागसूत्राय नम	२३-२३-२३-२०
३ श्रीठाणागसूत्राय नम	१०-१०-१०-२०
४ श्रीसमवायागसूत्राय नम	१०४-१०४-१०४-२०
५ श्रीभगवतीसूत्रायनम	४२-४२-४२-२०
६ श्रीज्ञातागसूत्राय नम	१९-१९-१९-२०
७ श्रीउपाशकदशागसूत्राय नम	१०-१०-१०-२०
८ श्रीअतगडदशागसूत्राय नम	१९-१९-१९-२०
९ श्रीअनुत्तरोववाइसूत्राय नम	२३-२३-२३-२०
१० श्रीपन्नावागरणसूत्राय नम	१०-१०-१०-२०
११ श्रीविपाकसूत्राय नम	२०-२०-२०-२०

बार उपाग

१२ श्रीउववाइसूत्राय नम	२३-२३-२३-२०
१३ श्रीरायपसेणीसूत्राय नम	४२-४२-४२-२०
१४ श्रीजीवाभिगमसूत्राय नम	१०-१०-१०-२०
१५ श्रीपन्नवणासूत्राय नम	३६-३६-३६-२०
१६ श्रीजबूद्विपन्नत्तीसूत्राय नम	५०-५०-५०-२०

१७ श्रीचंदपन्नत्तीसूत्राय नमः ६०–५०–५०–२०
१८ श्रीसूरपन्नत्ती ,, ६७–५७–५७–२०
१९ श्रीकप्पिया ,, १०–१०–१०–२०
२० श्रीकप्पवडिंसिया ,, १०–१०–१०–२०
२१ श्रीपुप्फिया ,, १०–१०–१०–२०
२२ श्रीपुप्फचूलिया ,, १०–१०–१०–२०
२३ वह्निदशा ,, १०–१०–१०–२०

६ छ छेद सूत्र

२४ श्रीव्यवहार सूत्राय नमः २०–२०–२०–२०
२५ श्रीवृहत्कल्प ,, ३–३–३–२०
२६ श्रीदशाश्रुतस्कंध ,, १९–१९–१९–२०
२७ श्रीनिशीथ ,, १६–१६–१६–२०
२८ श्रीमहानिशीथ ,, ४२–४२–४२–२०
२९ श्रीजीतकल्प ,, ३५–३५–३५–२०

१० पयन्ना

३० श्रीचउसरणपयन्ना सूत्राय नमः १०–१०–१०–२०
३१ श्रीसंथारापयन्ना ,, १०–१०–१०–२०
३२ श्रीतंदुलपयन्ना ,, १०–१०–१०–२०
३३ श्रीचंदाविज्झा ,, १०–१०–१०–२०
३४ श्रीगणिविज्झा ,, १०–१०–१०–२०
३५ श्रीदेविंदथुओ ,, १०–१०–१०–२०

३६ श्रीवीरथुओसुत्राय नम	१०-१०-१०-२०
३७ श्रीगच्छाचार ,,	५०-१०-१०-२०
३८ श्रीजोतिसकरंडक ,,	१०-१०-१०-२०
३९ श्रीमहापचख्खाण ,,	१०-१०-१०-२०

४ मूलसूत्र

४० श्रीआवश्यकसूत्राय नम	३२-३२-३२-२०
४१ श्रीउत्तराध्ययन ,,	३६-३६-३६-२०
४२ श्रीओघनिर्युक्ति ,,	१०-१०-१०-२०
४३ श्रीदशवैकालिक ,,	१४-१४-१४-२०

॥ बे छुटक सूत्र ॥

४४ श्रीअनुयोगद्वारसूत्राय नम	६२-६२-६२-२०
४५ श्रीनंदी ,,	५१-५१-५१-२०



११ गणधर तप

आ तप दरेक एक एक गणधरना एक एक उपवास अथवा आंबील करवाथी पुरो थाय छे तेमा जे गणधर नो उपवास होय ते दिवसे ते गणधरनो जाप २० मालानो करवो, अने साथीया विगेरे इग्यार इग्यार समजवा बीजी क्रिया बधि सरखी करवी ।



गणधरनो जाप

१ श्रीइन्द्रभूति	गणधराय नमः
२ श्रीअग्निभूति	,,
३ श्रीवायुभूति	,,
४ श्रीव्यक्तभूति	,,
५ श्रीसुधर्मा	,,
६ श्रीमंडित	,,
७ श्रीमौर्यपुत्र	,,
८ श्रीअकंपित	,,
९ श्रीअचल	,,
१० श्रीमेतार्य	,,
११ श्रीप्रभास	,,

॥ नवकार तपविधि ॥

आ तप जेटला अक्षर होय, तेटला उपवास करवाथी पूरो थाय छे जे दिवसे जे पदनो उपवास होय, ते पदनी २० माला गणवी सवा नवे पदना ६८ उपवास थाय छे. साथीया आदि जेटला जेपदना अक्षरो होय, तेटला समजवा.

गुणणो	उपवास
१ नमो अरिहंताण	७
२ नमो सिद्धाण	५

गुणणो	उपवास
३ नमो आयरियाण	७
४ नमो उवज्झायाण	७
५ नमो लोए सव्वसाहूण	९
६ एसो पंच नमुक्कारो	८
७ सव्वपावप्पणासणो	८
८ मंगलाणं च सव्वेसिं	८
९ पढम हवइ मंगल	९

इंद्रिय जय तप

पुरिमड्ढ, बेआसणु, एकासणु, नीवी, आंबील अने उपवास ए प्रमाणे पांच दिवसे करवाथी एक इंद्रिय जयनो तप थाय छे, ए रीते पांच इंद्रियोना जय माटे पांच ओली करवाथी पचीस दिवसे आ तप पूरो थाय छे, जे इंद्रियनो तप होय, ते तपनो जाप करवो

		सा	ख	लो	माला
१ ओलीमां स्पर्शेंद्रिय तपसे नम		८	८	८	२०
२ ओलीमा रसेंद्रिय	,,	५	५	५	२०
३ ओलीमा घ्राणेंद्रिय	,,	७	७	७	२०
४ ओलीमा चक्षुरिंद्रिय	,,	६	६	६	२०
५ ओलीमा श्रोत्रेंद्रिय	,,	५	६	६	२०



८ कर्मसुदन तप

आ तपनी आठ ओली होय छे, एक एक ओली आठ आठ उपवासनी होय छे, तेमा प्रथम अठम करवो, पछे एकांतरीया ६० उपवास करीने उपर एक अठम करवो पधामीलीने ६६ उपवास थाय छे, ६० पारणा थाय छे,

अथवा बीजी रीती पहेले दिवसे उपवास बीजे दिवसे एकासणो त्रीजे दिवसे ठाम चोवीहार एकदाणानो आयील करवो, चोथे दिवसे एकलठाणु [चोवीहार एकासणु] करवु, पाचमें दिवसे ठामचोवीहार एकदत्ती (एक वखते भाणामा पडेलुज खावु ते) नु एकासणु करवु, छठे दिवसे लुखी नीवी सातमे दिवसे आयील आठमे दिवसे अठकवलनु एकासणु करवु, आ रीतीथी आठ दिवसमा आ तप पूरो थाय छे साथीया विगेरे जेटली जे कर्मनी प्रकृतिओ होय तेटला करवा, माला २० गणवी उजमणामा मूल आठ कर्म उत्तर प्रकृति १५८ होवाथी रूपानो एक वृक्ष करावयो, ते पण आठ शाखा अने १५८ पानडा सहीत करावयो, तेना मूलमा कर्मरूप वृक्षने छेदवाने सोनानो कुहाडो राखवो जे दिवसे जे कर्मनो तप चालतो होय, ते दिवसे तेनो गुणणो आदि करवो

गुणणो		ख	लो.	सा	माला
१ श्रीअनतज्ञान गुणधारकाय नम		५	५	५	२०
२ श्रीअनतदर्शन	,,	९	९	९	२०
३ श्रीअव्याबाध	,,	२	२	२	२०
४ श्रीक्षायिकसम्यक्त्व	,,	२८	२८	२८	२०
५ श्रीअक्षयस्थिति	,,	४	४	४	२०
६ श्रीअमूर्त्ति	,,	१०३	१०३	१०३	२०
७ श्रीअगुरुलघु	,,	२	२	२	२०
८ श्रीअनतवीर्य	,,	५	५	५	२०



चदनबालानो अठम तपविधि

कोइपण दिवसे आ अठमतप करवो, पारणे अडदना बाकला मुनिने वहोरावीने पोते पण तेनोज पारणो करे, पारणे आबीलनो पचक्खाण करे, अने ठाम चोवीहार करवो, आ तपना पारणे रुपानी सूपडीने खुणे अडदना बाकला भरीने वहोरावे, ते साथे रुपानाणाथी गुरुनी पूजा करे, वहोरावती वखते पगमा तथा हाथमा सुतरनी अथवा रेशमनी फालकानी आंटी नाखवी, नली आतपमा (श्रीमहावीरनाथाय नम) आ पदनी वीश माला गणवी साथीया विगेरे वार वार समजवा.



॥ अथ पचकल्याणक तपविधि ॥

आ तप पाच वर्षमा पुरो थाय छे, अने उपवास आ- यील नीवी अथवा एकासणाथी आ तप कराय छे, एक एक कल्याणकनो एक एक उपवास करवो, जे तिथिये एक, बे, त्रण, चार के पाच कल्याणक होय तो, ते तिथिये प्रतिवर्षे एक एक उपवास करीने तप पुरो करवो जे कल्याणकनो उपवास चालतो होय तेनो गुणणो २० माला साथीया काउस्सग विगेरे बार बार जाणवा, बीजी क्रिया नित्यक्रिया माफक



पचकल्याणकनु गुणणो

तिथि कार्त्तिक (गुजराती आसो) वदि	कल्याणक
५ श्रीसभवनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल
१२ श्रीपद्मप्रभ अर्हते नम	जनम
१० श्रीनेमिनाथपरमेष्टिने नम	चवन
१३ श्रीपद्मप्रभनाथाय नम	दीक्षा
०)) श्रीमहावीर पारगताय नम	मोक्ष
कार्तिक सुदि	
३ श्रीसुविधिनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल
१२ श्रीअरनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल

मागशीर (गु० कार्तिक) वदि

९ श्रीसुविधिअर्हते नम'	जन्म
६ श्रीसुविधिनाथाय नम	दीक्षा
१० श्रीमहावीर नाथाय नमः	दीक्षा
११ श्रीपद्मप्रभ पारगताय नम	मोक्ष

मागशीर सुदि

१० श्रीअरनाथ अर्हते नम	जन्म
१० श्रीअरनाथ पारगताय नम	मोक्ष
११ श्रीअरनाथनाथाय नम'	दीक्षा
११ श्रीमल्लिनाथ अर्हते नम	जन्म
११ श्रीमल्लिनाथ नाथाय नम	दीक्षा
११ श्रीमल्लिनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल
११ श्रीनमिनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल
१४ श्रीसम्भवनाथ अर्हते नम	जन्म
१५ श्रीसम्भवनाथ नाथाय नम	दीक्षा

पोष(गु० मगशीर) वदि

१० श्रीपार्श्वनाथअर्हते नम	जन्म
११ श्रीपार्श्वनाथनाथाय नम	दीक्षा
१२ श्रीचद्रप्रभ अर्हते नम	जन्म
१३ श्रीचद्रप्रभनाथाय नम'	दीक्षा
१४ श्रीशीतलनाथ सर्वज्ञाय नम.	केवल

पोष सुदि

६ श्रीविमलनाथ सर्वज्ञाय नम		केवल
९ श्रीशांतिनाथ	,,	,,
११ श्रीअजितनाथ	,,	,,
१४ श्रीअभिनंदन	,,	,,
१५ श्री धर्मनाथ	,,	,,

माघ (गु० पोष) वदि

६ श्रीपद्मप्रभ परमेष्ठिने नम	च्यवन
१२ श्रीशीतलनाथ अर्हते नम	जन्म
१२ श्रीशीतलनाथ नाथाय नम	दीक्षा
१३ श्रीऋषभदेव पारगताय नम	मोक्ष
०)) श्रीश्रेयांसनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल

माघ सुदि

२ श्रीअभिनंदन अर्हते नम	जन्म
२ श्रीवासुपूज्य सर्वज्ञाय नम	केवल
३ श्रीविमलनाथ अर्हते नम	जन्म
३ श्रीधर्मनाथ अर्हते नम	जन्म
४ श्रीविमलनाथ नाथाय नम	दीक्षा
८ श्रीअजितनाथ अर्हते नम	जन्म
९ श्रीअजितनाथ नाथाय नम	दीक्षा
१२ श्रीअभिनंदन नाथाय नम	दीक्षा

१३ श्रीधर्मनाथ नाथाय नम	दीक्षा
फागण (माघ) वदि	
६ श्रीसुपार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल
७ श्रीसुपार्श्वनाथ पारगताय नम	मोक्ष
७ श्रीचंद्रप्रभ सर्वज्ञाय नम	केवल
९ श्रीसुविधिनाथ परमेष्ठिने नम	च्यवन
११ श्रीऋषभदेव सर्वज्ञाय नम	केवल
१२ श्रीश्रेयांसनाथ अर्हते नम	जन्म
१२ श्रीमुनिसुव्रत सर्वज्ञाय नम	केवल
१३ श्रीश्रेयांसनाथ नाथाय नम	दीक्षा
१४ श्रीवासुपूज्य अर्हते नम.	जन्म
०)) श्रीवासुपूज्य नाथाय नम	दीक्षा
फागुन सुदि	
२ श्रीअरनाथ परमेष्ठिने नम	च्यवन
४ श्रीमल्लिनाथ परमेष्ठिने नम	च्यवन
८ श्रीसंभवनाथ परमेष्ठिने नम	च्यवन
१२ श्रीमल्लिनाथ पारगताय नम	मोक्ष
१२ श्रीमुनिसुव्रत नाथाय नम	दीक्षा
चैत्र (गु० फागण) वदि	
४ श्रीपार्श्वनाथ परमेष्ठिने नम	च्यवन
४ श्रीपार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल

५ श्रीपद्मप्रभ परमेष्ठिने नमः — च्यवन
८ श्रीऋषभदेव अर्हते नमः — जन्म
८ श्रीऋषभदेव नाथाय नमः — दीक्षा

चैत्र सुदि

३ श्रीकुंथुनाथ सर्वज्ञाय नमः — केवल
५ श्रीअजितनाथ पारगताय नमः — मोक्ष
६ श्रीसंभवनाथ पारगताय नमः — मोक्ष
५ श्रीअनंतनाथ पारगताय नमः — मोक्ष
९ श्रीसुमतिनाथ पारगताय नमः — मोक्ष
११ श्रीसुमतिनाथ सर्वज्ञाय नमः — केवल
१३ श्रीमहावीर अर्हते नमः — जन्म
१५ श्रीपद्मप्रभ सर्वज्ञाय नमः — केवल

वैशाख [गु० चैत्र] वदि

१ श्रीकुंथुनाथ पारगताय नमः — मोक्ष
२ श्रीशीतलनाथ पारगताय नमः — मोक्ष
५ श्रीकुंथुनाथ नाथाय नमः — दीक्षा
६ श्रीशीतलनाथ परमेष्ठिने नमः — च्यवन
१० श्रीनमिनाथ पारगताय नमः — मोक्ष
१३ श्रीअनंतनाथ नाथाय नमः — दीक्षा
१४ श्रीअनंतनाथ अर्हते नमः — जन्म
१४ श्रीअनंतनाथ सर्वज्ञाय नमः

१४ श्रीकुंथुनाथ अर्हते नमः	जन्म
वैशाख सुदि	
४ श्रीअभिनंदन परमेष्ठिने नमः	च्यवन
७ श्रीधर्मनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
८ श्रीअभिनंदन पारगताय नमः	मोक्ष
८ श्रीसुमतिनाथ अर्हते नमः	जन्म
९ श्रीसुमतिनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
१० श्रीमहावीर सर्वज्ञाय नमः	केवल
१२ श्रीविमलनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
१३ श्रीअजितनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
जेठ (गु० वैशाख) वदि	
६ श्रीश्रेयांसनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
८ श्रीमुनिसुव्रत अर्हते नमः	जन्म
९ श्रीमुनिसुव्रत पारगताय नमः	मोक्ष
१३ श्रीशांतिनाथ अर्हते नमः	जन्म
१३ श्रीशांतिनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
१४ श्रीशांतिनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
जेठ सुदि	
५ श्रीधर्मनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
९ श्रीवासुपूज्य परमेष्ठिने नमः	च्यवन
१२ श्रीसुपार्श्वनाथ अर्हते नमः	जन्म

१३ श्रीसुपार्श्वनाथ नाथाय नम	दीक्षा

आषाढ (गु० जेठ) वदि

४ श्रीऋषभदेव परमेष्टिने नम	च्यवन
७ श्रीविमलनाथ पारगताय नम	मोक्ष
९ श्रीनमिनाथ नाथाय नम	दीक्षा

अषाढ सुदि

६ श्रीमहावीर परमेष्टिने नम	च्यवन
८ श्रीनेमिनाथ पारगताय नम	मोक्ष
१४ श्रीवासुपूज्य पारगताय नम	मोक्ष

श्रावण (गु० आषाढ) वदि

३ श्रीश्रेयामनाथ पारगताय नम	मोक्ष
७ श्रीअनतनाथ परमेष्टिने नम	च्यवन
८ श्रीनमिनाथ अर्हते नम	जन्म
९ श्रीकुथुनाथ परमेष्टिने नम	च्यवन

श्रावण सुदि

२ श्रीसुमतिनाथपरमेष्टिने नम	च्यवन
५ श्रीनेमिनाथ अर्हते नम॰	जन्म
६ श्रीनेमिनाथ नाथाय नम॰	दीक्षा
८ श्रीपार्श्वनाथ पारगताय नम	मोक्ष
१५ श्रीमुनिसुव्रत परमेष्टिने नम	च्यवन

भादरवा (शु० श्रावण) वदि

७	श्रीशान्तिनाथ परमेष्टिने नमः	च्यवन
७	श्रीचंद्रप्रभ पारगताय नमः	मोक्ष
८	श्रीसुपार्श्वनाथ परमेष्टिने नमः	च्यवन

भादरवा सुदि

९	श्रीसुविधिनाथ पारगताय नमः	मोक्ष

आसो (शु० भादरवा) वदि

१३	श्रीमहावीर परमेष्टिने नमः	गर्भापहार
०))	श्रीनेमिनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल

आसो सुदि

१५	नमिनाथ परमेष्टिने नमः	च्यवन



॥ अथ गोतमपात्रो तपविधि ॥

आ तपमां दरेक पूर्णिमाए उपवास करवो, श्रीगोतमस्वामीनी पूजा करवी, एवी रीते १५ पूर्णिमा सुधी तप करवो, तप पूर्ण थाय पारणे रूपानो पात्र करावी तेमां खीर भरी झोली सहित गोतमस्वामि तथा महावीरस्वामीनी आगल पात्र राखवो, अने साधुना पात्रामां खीर वोरावीने पीछे, खीरनो पारणो करे स्नात्र आदि पुजा करावे, उपवासने दिवसे (श्रीगोत-

मस्वामिने नम) आ पदनी २० माला साथीया विगेरे सतावीस सतावीस जाणवा,



पचरंगी तप

पाच जणा पाचपाच उपवासवाला, पाच जणा चार चार उपवासवाला, पाच जणा त्रण त्रण उपवासवाला, पाच जणा बबे उपवासवाला, पाच जणा एक एक उपवासवाला, बधा मीलीने २५ जणा होवा जोइए, वधारे होय तो हरकत नही, अने छेले दिवसे बधा जणानो पारणो आववो जोइये,



नवरंगी तप

आ तपस्यामा ८१ जणा होवा जोइये केमके नव जणा नव नव उपवासवाला उतरता उतरता अनुक्रमे छेला नव एक एक उपवासवाला समजवा, पारणो एक दिवसे बधानो आववो जोइये



आंबील वर्द्धमान तप

आ तपमा एक आंबील करी उपवास पछी बे आंबील करी उपवास पछी त्रण आंबील करी उपवास यावत अनुक्रमे १०० सो आंबील करी उपवास करवो

आ तप लागट करे तो १४ वर्ष त्रण मास २० दिवसे पुरो थाय छे, आ तप शरू करता प्रथम पाच ओली लागट करवी, आ तपमा हमेशा तपने दिवसे (नमो अरिहंताण) आ पदनी २० माला अने साथीया विगेरे बार बार समजवा



अथ नंदीश्वर तप विधि

आ तप श्रीनंदीश्वरद्वीपमा ५२ शाश्वता चैत्य आश्री ५२ उपवास करवाथी पुरो थाय छे, ते बावन उपवासो अमावास्याने दिवसे करवाना छे, आ तप दीवाळीनी अमावास्याये शरू करवानो छे, जे दिवसे उपवास होय ते दिवसे (श्रीनंदीश्वर शाश्वत जिन चैत्याय नम) आ पदनी २० माला गणवी, साथीया विगेरे बार बार समजवा



दर्शन तप विधि

आ तप एक अठम तप करवाथी अथवा एकांतरीया ३ उपवास करवाथी थाय छे



ज्ञान तपविधि

आ तप एक अठम अथवा एकांतरीया त्रण उप
वासथी पुरो थाय छे



चारित्र तपविधि

आ तप एक अठम अथवा एकांतरीया त्रण उप-
वासथी पुरो थाय छे

आ त्रणे तपनो गुणणो आदि नवपदविधि
प्रमाणे करवो



धर्मचक्र तप

प्रथम छठ करीने पारणो करवो पछे एकांतरीया
३० उपवास करवा, अरिहंत पदनु गुणणु आदि करवु



योगशुद्धि तप

मनोयोग आश्री प्रथम दिवसे नीवि बीजे दिवसे
आंबील त्रीजे दिवसे उपवास करवो एवी रीते वचन
योगनी अने काययोगनी ओलि करवी आ तप त्रणे
ओलीए पुरो थाय छे, गुणणो २० माला साथीया खमा०
काउस्सग्ग ३ त्रण त्रण करवा प्रथम ओलीमा मनोयोग

तपसे नम बीजी ओलीमा वचोयोग तपसे नम. त्रीजी ओलीमा काययोग तपसे नम

अट्ठाइ तप

आ तप आसो चैत्र सुदि आठमथी शरु थाय छे, आठमथी पुनमसुधी आठ दिवसोमा एकासणु नीवी आंबील अथवा उपवास करवा आ तप मात वरसे पुरो थाय छे



चाद्रायण तप

आ तपना बे भेद छे, सुदि एकमे एक कवल बीजे बे कवल एम एक एक कवलनी वृद्धि करवाथी पुनमने दिवसे १५ कवल लेवा, वदि एकमें १५ कवल पछे एक एक कवल ओछो करवाथी अमावास्याये एक कवल लेवो, एक मासमा आ तप पुरो थाय छे, आ तपने यव मध्य चाद्रायण कहे छे, वदि एकमें एक कवल, बीजे बे कवल एम एक एकनी वृद्धि करवाथी अमावस्याये १५ कवल लेवा सुदि एकमे १५ कवल पछे एक एक कवल ओछो करवाथी पुनमने दिवसे एक कवल लेवो आ तप पण एक मासमा पुरो थाय छे आ तपने वज्रम चाद्रायण कहे छे

तीर्थङ्कर वर्धमान तप

आ तप एकासणा नीवी आंबील अथवा उपवासथी थाय छे,तेमा प्रथम श्रीऋषभदेवस्वामीनु एक एकासणु बीजा अजितनाथना बे एकासणा एक एक एकासणानी वृद्धि करतां चोवीसमा महावीरस्वामिना २४ एकासणा करवा पछे महावीरस्वामीनु एक एकासणु पार्श्वनाथना बे एकासणा एम एक एक एकासणानी वृद्धि करता श्री ऋषभदेवस्वामीना २४ एकासणा करे एम एक एक तीर्थंकरना २५ एकासणा थाय छे उपवास आदिथी आ तप करवो होय तो उपर कहेल विधिथी २५-२५ उपवास करवा एकासणिया करवा होय अथवा छुटापण उपवास करी शकाय छे जे तीर्थंकरनो तप चालतो होय ते तीर्थंकरनो जाप करवो, बाकी अरिहंत पदनी जेम समजवो



परम भूषण तप

आ तपमा बत्रीस लागट आंबील करवा, अथवा एकांतरीया एकासणावाला ३२ आंबील करवा गुणणो आदि अरिहंत पदनी जेम



तीर्थंकर दीक्षा तप

आ तपमा जे जे तीर्थंकरोए दीक्षा लेती वखते जे तप कर्यो छे ते तप एकी साथे अथवा एकातरिया उपवासथी पूरो करवानो छे सुमतिनाथे एकासणो करीने दीक्षा लीधी छे तेथी एकासणो करवो, वासुपूज्यस्वामिए उपवास करीने दीक्षा लीधी छे ते आश्री एक उपवास अने मल्लिनाथ अने पार्श्वनाथे अठम करीने दीक्षा लीधी छे ते आश्री अठम अथवा एकातरिया त्रण उपवास बाकी २० तीर्थंकरोए छठ करीने दीक्षा लीधी छे ते आश्री छठ अथवा एकातरीया बे उपवास करवा, गुणणामा जे तीर्थंकरनी तपस्या चालती होय ते तीर्थंकरना नामने आगल नाथाय नम जेम श्रीरपभदेवनाथाय नम बाकी अरिहन्त पदनी जेम समजवो



तीर्थङ्कर ज्ञानतप

आ तपमां जे जे तीर्थंकरोने जे जे तपस्याथी केवल ज्ञान उपनु छे ते तप एकी साथे अथवा एकातरिया उपवास करवाथी पूरो थाय छे श्रीरपभदेव मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ ने केवलज्ञान अठम तपथी उपनु छे तेथी चार अठम अथवा एकातरिया उपवास

करवा, वासुपूज्यस्वामिने केवलज्ञान एक उपवासथी उपनु छे तेथी एक उपवास करवु, बाकी १९ तीर्थंकरोने केवलज्ञान छठ तपथी उपनु छे तेथी १९ छठ अथवा एकातरिया उपवास करवा. जे जे तीर्थंकरनो तप चालतो होय ते ते तीर्थंकरनो गुणणो करवो श्रीऋषभदेव सर्वज्ञाय नम , इत्यादि साथिया आदि अरिहंत पदनी जेम समजवा



तीर्थङ्कर निर्वाण तप

आ तपमा जेजे तीर्थङ्करो जे जे तपश्चर्याथी मोक्षे गया छे ते तप एकी साथे अथवा एकातरिया उपवास करवाथी पूरो थाय छे, श्रीऋषभदेव छ उपवासथी मोक्ष गया छे, महावीरस्वामी छठ करीने मोक्ष गया छे, अने बाकी २२ तीर्थङ्करो एक मासना एटले ३० उपवास करीने मोक्ष गया छे, ते एकीसाथे अथवा एकातरिया अथवा छुटा उपवास करवाथी आ तप पुरो थाय छे साथिया आदि अरिहंत पदनी जेम गुणणो पारगताय नम' जे तीर्थंकरनी तपश्चर्या चालती होय ते तीर्थंकरना नामने आगल जोडवो जेम श्रीऋषभदेव पारगताय नम इत्यादि



चतुर्विध संघ तप

आ तपमां प्रथम एक छठ करीने पछे एकांतरिया ६० उपवास करवा, गुणणो नमोतित्थस्स २० माला, साथिया विगेरे ६२ बासठ बासठ समजवा



तीर्थंकर च्यवन तप

आ तप एक एक तीर्थंकरोना च्यवन कल्याणक आश्री एक एक उपवास करवाथी पूरो थाय छे ते चोवीस उपवास एकांतरिया अथवा छुटा कराय छे गुणणामां जे तीर्थंकरनो तप चालतो होय ते तीर्थंकरनाम आगल परमेष्टिने नमः जोडवु जेम श्रीऋषभदेव परमेष्टिने नमः बाकी अरिहंत पदना जेम



तीर्थंकर जन्म तप

आ तप पण च्यवन कल्याणकनी जेम समजवो, परंतु गुणणामां अर्हते नमः कहेवो, जेमके श्रीऋषभदेवअर्हते नमः

संवत्सर तप

एक वर्षमां चोवीस पाखी संबंधी आलोयणाना २४ उपवास त्रण चोमासी संबन्धी आलोयणाना ६

उपवास सवच्छरी सबन्धी आलोयणना त्रण उपवास सर्व मीली ३३ उपवास एकातरीया अथवा छुटा करवाथी आ तप पूरो थाय छे गुणणो सवच्छर तपसेनम बाकी अरिहत पद जेम

पश्नोत्तर तपओली

आ तपमा एक एक ओली एकानरिया आठ आठ उपवासनी थाय छे एवी नव ओली करवाथी आ तप पूरो थाय छे बधा मिली ७२ उपवास थाय छे गुणणो आदि अरिहन पदनी जेम समजवो, आ तप सुदि नवमीथी सरु करवो

समवसरण तप

आ तप १६ दिवसे पुरो थाय छे, भादरवा (शु० श्रावण) वदि ४ थी सरू करीने भादरवा सुदि ४ सुधी कराय छे तेमा पहेले दिवसे एकासणो बीजे दिवसे नीवी त्रीजे दिवसे आयिल चोथे दिवसे उपवास करवो एवी रीते चार ओली करवी

	साथिया	माला	दिवस
१ श्रीभावजिनाय नम	१०	२०	१
२ श्रीश्रुतसमवसरण जिनायनम	९	२०	२

	माथीया	माला	दिवस
३ श्रीमनःपर्यवजिनाय नम	१२	२०	३
४ श्रीकेवलि जिनाय नम	८	२०	४

॥ दशविध यति धर्म तप ॥

आ तप दश एकातरिया उपवास करवाथी पुरो थाय छे अने सुदिमा शरु थाय छे तपने दिवसे गुणणु विगेरे १० माला आ प्रमाणे—

१ क्षमागुणधराय	नम	२ मार्दवगुणधराय	नम
३ आर्जवगुणधराय	नम	४ मुक्तिगुणधराय	नम
५ तपोगुणधराय	नम	६ सयमगुणधराय	नम
७ सत्तगुणधराय	नम	८ शौचगुणधराय	नम
९ अकिंचन गुणधराय	नम	१० ब्रह्मचर्य गुणधराय	नम

पचपरमेष्ठी तप

पहेले दिवसे उपवास बीजे दिवसे एकलठाणु त्रीजे दिवसे आबील चोथे दिवसे एकासणु पाचमे दिवसे नीवी छठे दिवसे परिमड्ढ अने सातमे दिवसे बेयासणु ए प्रमाणे सात दिवसोनी एक ओली थाय छे एवी रीते पाच ओली करवाथी आ तप ३५ दिवसोमा पूरो थाय छे

गुणणो १ नमोअरिहन्ताण २ नमोसिद्धाण ३ नमोआयरियाण ४ नमोउवज्झायाण ५ नमोलोएसव्वसाहूण

एक एक ओलीमा गुणणो साथिया विगेरे एक एक नवपदओलीमा कहेल प्रमाणे पदनो सात सात दिवस सुधी करवो

सर्वाङ्ग सुंदर तप

आ तप आठ एकातरिया उपवास करवा पारणें आंबील करवाथी आठ उपवास अने सात आंबील मिलीने १५ दिवसे पूरो थाय छे,

आ तप सुदि एकमथी शरू थाय छे अने पुनमे समाप्त थाय छे गुणणो आदि अरिहंत पदनी माफक

निरूजसिंह तप

एनु तप सर्वाङ्ग सुंदर तपनी जेम समजवो पण एटलु विशेष छे वदि एकमनो शरू करवो अमावास्याये पुरो थाय छे.

सौभाग्य कल्पवृक्ष तप

एकातरिया १५ उपवास करवाथी आ तप त्रीस दिवसमा पुरो थाय छे चैत्र सुदि एकमनो आ तप शरू थाय छे गुणणो अरिहंत पदनी जेम

अष्टापद पावडी तप ओली

आ तप ८एकासणा ८नीवी ८आंबीलअथवा ८उपवासथी थाय छे असो सुदि ८ थी लइने पुनम सुधी ८ आठ

खामणादि करवाथी एक ओली थाय छे एवीरीते आठ
ओली करवाथी ८ वर्षे आ तप पूरो थाय छे गुणणो
श्रीअष्टपदतीर्थाय नम माला २० साथिया आदि ८ आठ

अट्ठ खदर्शि तप

आ तपमा पहेले मासे सुदि १ बीजे मासे सुदि
२ त्रीजे सुदि ३ एम यधना पनरमे मासे सुदि १५ सु
उपवास कराय छे एम १५ उपवास करवाथी १० सुदि
पखवाडे आ तप पूरो थाय छे अरिहंतपदनु गुणणुआदि

कर्मचतुर्थ तप

आ तप प्रथम अठम पछे एकातरिया ६० उप
वास पछे अतमा उपर एक अठम करवाथी पूरो थाय
छे आ तप आतरा रहित करवो यधा ६६ उपवास
थाय छे गुणणो आदि अरिहंत पदनी जेम

कर्मचक्रवाल तप

आ तप प्रथम अठम पछे एकातरिया ६४ उपवास
उपर अठम तप करवाथी पुरो थाय छे यधा ७० उपवास
थाय छे गुणणुआदि अरिहंत पदनी जेम

चत्तारि अठ दस दोय तप

प्रथम चार पछे आठ पछे दश पछे बे उपवास
करवाथी आ तप पूरो थाय छे अष्टापद तीर्थाय नम

माथिया विगेरे २८

गौतम कमल तप

आ तपमां नव उपवास एकांतरिया करवा गुणणो श्रीगौतमस्वामिने नमः माथिया विगेरे २७ मताशीम

९६ जिन तप

आ तपमा एक एक तीर्थंकर आश्री एक एक उपवास करवाथी ९६ उपवास थाय छे जे तीर्थंकरनो उपवास चालतो होय तेनो गुणणो माथिया विगेरे बार बार नहीं आवतो होय तो नमो अरिहंताणनी माला फेरववी

१७० जिन तप

आ तपमा १७० उपवास कराय छे जे जे तीर्थंकरनो तप चालतो होय तेहनो अथवा नमो अरिहंताणनो गुणणो माथियादि अरिहंत पदनी जेम

देवल इडा तप

आ तपमा बेसणापाच एकासणा ७ नीवी नव आंबील पाच एक उपवास होय छे २७ दिवसमा आ तप पुरो थाय छे गुणणो नमो अरिहंताण माथियादि बार बार



अष्टकर्मोत्तर प्रकृति तप

आठ कर्मनी उत्तर प्रकृति १५८ शेवाथी आ तप १५८ उपवास करवाथी पूरो थाय छे तेमा ज्ञानावरणी कर्मना पांच, दर्शनावरणी कर्मना नव वेदनीकर्मना बे मोहनी कर्मना २८ आयु कर्मना ४ नाम कर्मना १०३ गोत्र कर्मना२ अंतराय कर्मना पांच उपवास करवा,पण ते एकांतरिया करवा, नमोसिद्धाणनो गुणणो करवो साथिया विगेरे सिद्धपदनी जेम

पांच पचखाण

प्रथमे दिवसे उपवास बीजे दिवसे बेयासणो त्रीजे दिवसे एकासणो चोथे दिवसे नीवी पांचमे दिवसे आंबील आ एक ओली थाय छे एवी पांच ओली करवाथी पचीस दिवसोमा आ तप पुरो थाय छे नमोसिद्धाण गुणणो साथिया विगेरे आठ आठ

पंचमहाव्रत तप

आ तपमा एकांतरिया पांच उपवास करवा नमो लोएसव्वसाहूणनो गुणणो साथिया विगेरे २७ सतावीस

तपस्या पुरी थया बाद शक्ति
अनुसार उजमणो करवो

॥इति श्रीजिनदत्तसूरिगुरु प्रसादात् श्रीनवपदादि विधिसंग्रह ॥

समाप्त

आप्तोष्टादशदोषशून्यजिनपथार्हन्देवो मम ।
त्यक्तारंभ परिग्रह' सुविरितो वाचयम सद्गुरु' ॥
धर्म -केवलिभाषितो वरदय कल्याणहेतु पुन-
रर्हत्सिद्धसुसाधुधर्मशरण भूयात्रिशुध्याभव ॥१॥

अर्थ —यथार्थ वक्ता अढार १८ दोषरहित जिनेश्वर एवा अरिहन मारा सुदेव छे, आरभ परिग्रह रहित सूत्रने अनुसार क्रिया करनारा एवा साधु मारा सुगुरु छे, श्रेष्ट दयावालो कल्याणनो करनारो एवो केवलिभाषित मारे सुधर्म छे, ज्यां सुधी आ ससारमा रहु, त्या सुधी मारे शुद्ध मन वचन कायाथी अरिहत सिद्ध साधु अने केवलीभाषित धर्मनु शरण थाओ ।१।

भूतानागतवर्त्तमानसमये यद्दुष्प्रयुक्तैर्मनो-
वाक्कायै कृतकारितानुमतिभिर्देवादितत्वत्रये ॥
सघे प्राणिषुचाप्तवाच्यनुचित हिंसादि पापास्पद ।
मोहाद्येन मया कृत तदधुनागर्हामि निंदाम्यहम् ॥२॥

अर्थ —अतीत भविष्य अने वर्त्तमान कालमा अशुद्ध मन वचन अने कायाथी पोते करवो बीजा पासेथी करावचो करता होय तेनी अनुमोदना करवाथी देवादि त्रण तत्वने विषे चतुर्विध सघने विषे प्राणिओने

विषे आप्त वचननें विषे मोहथी अध थई में जे अनुचित कर्युं होइ, हिंसादि १८ पापस्थान कीधां [सेव्यां] होय तेने हुं मनथी गुरुशाखे गर्हुं छुं, आत्मशाखे निंदु छुं. ॥ २ ॥

अर्हत्सिद्धगणीन्द्रपाठकमुनि श्राद्धाऽव्रतिश्रावका-
द्यर्हत्वादिकभावतद्गतगुणान् मार्गानुसारीन् गुणान् ॥
श्रीअर्हद्वचनानुसारिसुकृतानुष्ठान सद्दर्शन-
ज्ञानादीननुमोदयामि सुत्रिभिर्योगैः प्रशंसाम्यहम् ॥३॥

अर्थ —अरिहन्तोना अरिहन्तपणाना, सिद्धोना सिद्धपणाना, आचार्योना आचार्यपणाना, उपाध्यायोना, उपाध्यायपणाना साधुओना साधुपणाना, श्रावकोना श्रावकपणाना, अविरति श्रावकोना समकितपणाना, भावोने तथा उपरोक्तअरिहन्तादिकना गुणोने, तथा मार्गानुसारी गुणोने तथा श्रीअरिहन्तना वचन अनुसार सुकृत अने अनुष्ठान [क्रिया] ने, सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रादिकने, हुं अनुमोदना करुंछुं, अने प्रशंसा करुंछु

संसारेऽभ्रमया स्वकर्मवशगा जीवा भ्रमतोऽखिला ।
क्षाम्यते क्षमिता क्षमतु मयि ते केनापि सार्द्धं मम ॥
वैरं नास्ति च मैत्रिनाऽस्ति सुखदा जीवेषु सर्वेषु मे ।
यद्दुर्श्चिन्तित भाषितमविहित मिथ्याऽस्तु तद्दुष्कृतम् ४

अर्थ —आ संसारने विषे पोतपोताना कर्मनेविषे वश (आधीन) थएला चार गतिमां भमता सर्व जीवोने हुं खमावुं छुं, ते पण खम्या छता मारा उपर क्षमा करो, कोइनी साथे मारो वेरभाव नथी, सर्वजीवोने विषे सुखने देवावाळी मारी मित्रता छे, जे मनथी दुष्ट चिंतवेलु, वचनथी भाषेलु, अने कायाथी करेलु, ते दुष्कृत (पाप) मिथ्या थाओ. [४]

तद्यायास्यति मे कदा दिनमहं यत्पालयिष्येऽमलं ।
चारित्रं जिनशासनं गतमुनेर्मार्गे चरिष्याम्यहं ॥
मुक्तो जन्मजरादिदुःखनिवहात्संवेगनिर्वेदता–
स्तीकास्तिक्यदयालुताप्रशमता धर्त्ता भविष्याम्यहम् ।५।

अर्थ —ते दिवस मारो क्यारे आवशे, के जे दिवसे निर्मल चारित्र अने जिन आज्ञाने पालीस, पूर्वमुनिओना मार्गमां चालीश, जन्म जरा मृत्युआदि दुःखना समुदायथी मुक्त थइस, संवेग (संसारिक सुखने दुःखरूप मानवु ते) निर्वेदता (संसारने केदरूप मानवु ते) आप्त [जिनेश्वर] कहेल वचन उपर श्रद्धारूप ते आस्तिकता दयालुता प्रशमता आदि गुणोने धारण करनारो थइश (५)



सकल तीर्थ नमस्कार

कर्मभूमिषु ये केपि, भूतानागत साम्प्रत ।
अर्हंतो भगवनस्तान्, सर्वान्वदे जिनेश्वरान् ॥१॥
पंच महाविदेहेषु, विचरंतो जिनेश्वरा ।
सीमंधरादय. सति, ये तान्वदे निरंतरम् ॥२॥
सिद्धा सिद्धिस्थिता ये च, ये च सिध्यति साम्प्रत ।
सेत्स्यति ये च तान् सर्वान्, सिद्धान्वदे निरंतरम् ।३।
सार्द्धद्वीप द्वयांत स्था, ये साधयति साधव ।
ज्ञानादिभि शिवाध्वान, वदेऽहं ता मुदाऽखिलान् ॥४॥
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले, यानि चैत्यानि चार्हता ।
तानि सर्वाणि वदेऽहं, शाश्वताऽशाश्वतानि च ॥५॥
श्रीशत्रुंजय - सम्मेत, तारंगाष्टापदार्बुदान् ।
उज्जयंतादि तिर्थानि, वंदे सर्वाणि भावत ॥६॥
जिनकल्याणकस्थाने, यानि तिर्थानि साम्प्रत ।
सत्यन्यान्यपि तीर्थानि, तानि वंदे निरंतरम् ॥७॥

